सर्वपंथ समादर मंच

एक रास्ता

मंच

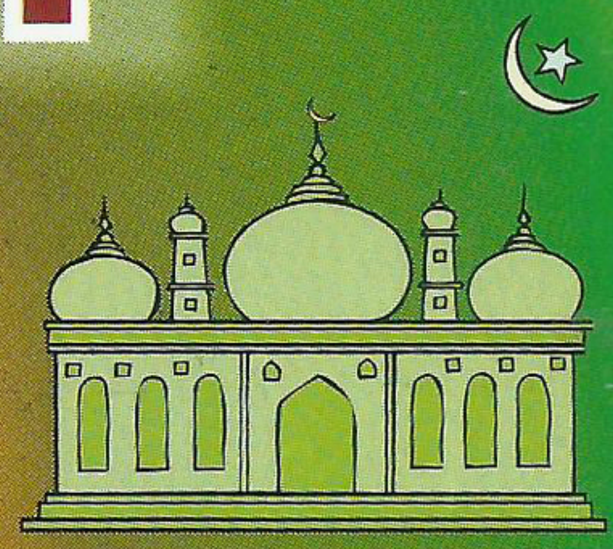

लेखक

दत्तोपंत ठेंगडी

सर्वपंथ समादर मंच

एक रास्ता

लेखक

दत्तोपंत ठेंगडी

संस्थापक, भारतीय मजदूर संघ

प्रकाशक

भारतीय श्रमशोध मंडल

सर्वाधिकार
भारतीय श्रमशोध मंडल

प्रकाशन तिथी
बुधवार, दि. २९ मार्च २००६
द्वितीय आवृत्ती

प्रकाशक
श्री. अनंत करंबेलकर
भारतीय श्रमशोध मंडल,
३१२२, संगत्राशान, पहाडगंज,
नई दिल्ली-११००५५

सहयोग राशी : रुपये १५

टाईप सेटींग
आशीर्वाद कॉम्प्युटर सेंटर,
नागपुर. भ्रमण : ९४२२८०६८५९

मनोगत

प्रिय बंधु एवं भगिनी,

सस्नेह सादर प्रणाम ।

भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ एवं स्वदेशी जागरण मंच के जन्मदाता, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक तथा थोर विचारवंत श्रद्धेय स्व. दत्तोपंत ठेंगडीजी ने सर्वपंथ समादर मंच की स्थापना १४ अप्रैल १९९१ को भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के १००वें जन्मदिन पर की । इस मंच का प्रथम अधिवेशन नागपूर में दिनांक १६ अप्रैल १९९४ को हुआ । अधिवेशन का उद्घाटन मौलाना वहीदुद्दीन साहब ने किया जो बाद में मंच के संरक्षक भी बने । इसके प्रथम अध्यक्ष नागपूर के स्व.जाल.पी.गिमी थे । मंच का दायरा श्रमिक क्षेत्रों तक सिमीत है । प्रायः सभी औद्योगिक क्षेत्र में मंच का कार्य है ।

सर्वपंथ समादर मंच की स्थापना करने के पिछे स्व. दत्तोपंत का क्या भाव था, क्या सन्दर्भ था, क्या उद्देश था इसका विस्तृत विवेचन उन्होंने समय-समय पर किया है ।

स्व. दत्तोपंत के विचार शब्दांकित करने का और उसे प्रकाशित करने का महत्कार्य भारतीय श्रमशोध मंडलद्वारा इसके पूर्व हुवा है । ''सर्वपंथ समादर मंच-एक रास्ता'' नामक पूस्तिका १३ मार्च १९९८ को प्रकाशित की गयी । मंच के प्रति आदरभाव तथा प्रेम रखनेवाले हजारो-हजारो कार्यकर्ताओंने यह पूस्तिका पढी है ।

भारतीय मजदूर संघ एक गैरराजनैतिक संघटन है यह हम जानते है । भारतीय मजदूर संघ यह एक ऐसा परिवार है जहाँ सभी धर्म, पंथ और जाति के कार्यकर्ता एक दिल से तथा एक मन से एकत्रित होते है । यहाँ आचार,विचार वक्तृत्व और कृति में अंतर नहीं है यह कार्यकर्ता जानते है यह अनुभव भी करते है । यही कारण है की श्रमिक क्षेत्र में सर्वपंथ समादर मंच को विशेष स्थान प्राप्त हुआ है ।

कार्यकर्ताओंकी माँग थी कि, सर्वपंथ समादर मंच-एक रास्ता इस पूस्तिका का पुर्नप्रकाशन हो । उनकी इच्छा की पूर्तता करने हेतू यह द्वितीय आवृत्ति प्रकाशित की है ।

स्व. दत्तोपंत ठेंगडी जी तथा अन्य मान्यवरोंने सर्व पंथ समादर मंच के सन्दर्भ में जो विचार रखें उन्हे इस पुस्तक के माध्यम से आप तक पहुँचाने का प्रयास हम कर रहे है । आशा है आप सभी इस पुस्तक को सस्नेह स्विकार करेंगे ।

धन्यवाद !

भवदीय

सी.बी.फ्रँक	**आलमगीर गौरी**	**अख्तर हुसैन**
अध्यक्ष	महामंत्री	राष्ट्रीय मंत्री

सर्वपंथ समादर मंच

मा. दत्तोपंत ठेंगडी जी का भाषण (इंदौर)

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मंच पर आसीन सभी सन्माननीय महानुभाव और इस सभागृह में उपस्थित इंदौर के सन्माननीय और समझदार नागरिक बंधुओं और भगिनी गण ।

स्व. विद्यार्थी जी का स्मरण

आज हम श्री गणेश शंकर विद्यार्थी जी का सम्मान कर रहे हैं । इसकी भूमिका हमारे आलमगीर गोरी जी ने आपके सामने रखी । जब 'सर्वपंथ समादर मंच' का यह निर्णय प्रकाशित हुआ तो दो तरह की आपत्तियाँ उठायी गई । कुछ लोगों ने कहा कि 'सांप्रदायिक एकता के बारे में गणेश शंकर विद्यार्थी से भी अधिक अच्छे भाषण देने वाले, लेख लिखने वाले, राजनेता आज भी मौजूद है, आप इनका सम्मान कर रहे है, उनका क्यों नहीं '? दूसरों ने कहा - 'गणेश शंकर विद्यार्थी कांग्रेस के नेता थे । हमलोग तो कांग्रेस के पक्ष में नहीं हैं, फिर क्यों उनका सम्मान करना '?

दोनों का पहले मैं संक्षेप में जवाब देता हूँ । आज राजनीतिक दल जातियाँ हो गई हैं । हर पार्टी यानी एक जाति । १९३७ ई. तक कांग्रेस राजनीतिक दल नहीं था । वह राजनीतिक मंच था । जिसके कारण सभी देशभक्त उस मंच पर एकत्रित रहते थे । जिन दिनों गणेश शंकर विद्यार्थी का आत्मबलिदान हुआ, लगभग उन्हीं दिनों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक व निर्माता प.पू.डॉ.हेडगेवार जी ने व्यक्तिगत हैसियत से कांग्रेस के नेतृत्व में, कांग्रेस के झंडे के नीचे महात्मा गांधी के आगे स्वयं झंडा सत्याग्रह किया था और जेल गए । लोग इन बातों को लिंक नहीं कर पाते कि वे कांग्रेस के सिपाही के नाते जेल गए थे । हालाँकि इधर उन्होंने ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का निर्माण किया था । वे व्यक्तिगत हैसियत से जेल गये, कारण उस समय कांग्रेस कोई पार्टी नही थी । १९३७ के बाद वह पार्टी बन गई ।

इसलिए आज के वातावरण के आधार पर उस समय की कल्पना करना गलत बात है और, दूसरी बात यह है कि 'सेक्युलर' शब्द का अर्थ समझने की कोशिश भी न करते हुए केवल मुस्लिम वोट बैंक की तरफ नजर रखते हुए सामजस्य बात करने वाले नेता बहुत हैं । मुस्लिम वोट बैंक का उद्देश्य ध्यान में रखकर गणेश शंकर विद्यार्थी ने आत्मबलिदान नहीं किया । ऐसा कोई अल्टेरियल मोटिव लेकर उनका आत्मबलिदान नहीं हुआ । इस विशुद्ध भावना से हुआ कि समाज में एकता होनी चाहिए । और उनके

बलिदान से हमें संदेश मिलता है कि वास्तव में यदि विभिन्न गुटों में केवल हिंदू मुसलमान में नहीं, विभिन्न गुटों में भी कुछ स्थायी एकता निर्माण करनी हो तो वह केवल भाषणों से नहीं होती, प्रचार से नहीं होती, टी.व्ही., रेडियों, समाचारपत्रों से नहीं होती । जब उस एकता के लिए आत्मबलिदान करने वाले ईमानदार लोग तैयार होंगे तभी एकता हो सकती है । यह संदेश उनके जीवन से हमें मिलता है । इसलिए हम गणेश शंकर विद्यार्थी का सम्मान कर रहे हैं ।

अभी जो कुछ बातें पूर्व-वक्ता ने बतलायी वह सभी बातें ठीक हैं । जो वे बोल रहे हैं, मैं उससे शत् प्रतिशत सहमत हूँ, किन्तु मेरा एक ही कहना है कि प्रश्न को ठीक ढंग से समझ लीजिए । राजनेताओं के समान मत कीजिए कि मुसलमानों का वोट चाहिए तो एक अलग बात बोलना, हिंदुओं का चाहिए तो अलग बात बोलना, जाटों का चाहिए तो अलग बात बोलना, राजपूतों का चाहिए तो अलग बात बोलना, ब्राह्मण, ठाकुर का चाहिए तो अलग बात बोलना । फारवर्ड हैं, बैकवर्ड हैं, ओ.बी.सी. हैं, दलित हैं- सबके लिए अलग-अलग बोलना ।

मै पूछता हूँ कि हिंदू-मुसलमान एक हैं क्या ? ऐसा नहीं है । आज की व्यवस्था ऐसी है जिसमें तरह-तरह के भेद हैं । केवल हमारे हिंदू-मुस्लिम एकता की बात करने से व्यवस्था में पर्याप्त समाधान हो जाएगा, क्या आप ऐसा समझते हैं ? बिहार जैसे प्रदेश में अपरकास्ट और बैकवर्ड क्लास के बीच खून-खराबे तक मारपीट चलती है । कई प्रदेशों में पद्दलित विरुद्ध सवर्ण और सवर्ण में भी ब्राह्मण-ठाकूर, जाट-गुर्जर के नाम पर खून-खराबे तक मारपीट चलती है । तो, यह जो एकता का प्रश्न है वह सिर्फ हिंदू-मुस्लिम तक ही सीमित है ऐसा समझना बिल्कुल गलत है ।

यह सोचना होगा कि सारा वातावरण ऐसा क्यों है ? इसलिए समस्या को ठीक ढंग से समझनी चाहिए। मेरी शिकायत यह है कि हमलोग समस्या को ठीक ढंग से समझते नहीं हैं और सोल्युशन ढूंढने का प्रयास करते हैं । आलविन टॉपलर ने कहा है कि 'The right question is more important than right answers to wrong questions' गलत प्रश्नों का सही उत्तर देने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात है कि प्रश्न ही सही रहे ।

इसके लिए सबसे पहले 'प्रश्न क्या है ? ये समझना आवश्यक है । जैसे कि केवल हिंदू-मुसलमान में झगडा है ऐसा है क्या ? मैंने जाट विरुद्ध नॉन जाट झगडे देखे हैं ;जाट विरुद्ध गुर्जर मार पीट देखी हैं । ब्राह्मण, ठाकुर विरुद्ध बैकवर्ड क्लास का झगडा चलता है। झगडे क्यों हैं? सारे हिंदू एक है क्या ? सारे मुसलमान भी एक है क्या ?

आज हम हिंदू-मुसलमान एकता की बात करते है, सारे मुसलमान भी एक है क्या? लखनऊ में हर दो साल में एक बार शिया सुन्नी मार पीट होती है - पाकिस्तान है । कहते है वह इस्लामिक स्टेट है । वहाँ सिंध के मुसलमान पाकिस्तान से अलग होना चाहते है। बलूचिस्तान पाकिस्तान से अलग होना चाहता है । पंजाब में शिया-सुन्नी के झगडे चलते है, अहमदिया लोगों की पिटाई होती है । इतना ही नहीं, जिन्होंने पाकिस्तान का प्रस्ताव सर्वप्रथम सिंध के एसेबंली में रखा वे जी. एम. सईद उन्होंने विभाजन की बात की इसलिए उनको पाकिस्तान में भी जेल में रखा गया । वे जब हिंदुस्तान आए थे तब उन्होंने कहा कि मुझे आज महसुस हो रहा है कि मैनें गलती की । उस समय जो माहौल था उसके बहाव में मै बह गया । आज मैं समझ रहा हूँ कि केवल रिलीजन के आधार पर कोई राष्ट्र निर्माण नहीं हो सकता और इस दृष्टि से यह जो इस्लामिक नेशन नाम की चीज है, वह गलत है । जी. एम. सईद ने स्पष्ट रुप से और जोर देकर कहा कि मैं अल्ला का इसलिए शुक्रगुजार हूँ कि मुझे अल्ला ने समझदारी आने के लिए आवश्यक जिंदगी दी । जिसके कारण मैं यह सब महसूस कर रहाँ हूँ और भाषण दे रहा हूँ । यदि मैं पहले मर जाता तो पाकिस्तान जिंदाबाद कहते हुए मर जाता ।''

आपसी झगडै दोंनों में है

इसी तरह क्या दुनिया के सारे मुसलमान एक है ? इराक और इरान का झगडा क्या हिंदू-मुसलमान का झगडा है ? इराक और कुर्द का झगडा क्या हिदू और मुसलमान का झगडा है ? क्या सारे अरब देश एक है ? अमरीका के प्रलोभन में आकर सऊदी अरब एवं इजिप्त ने इराक के खिलाफ मोर्चा लगाया था । ये क्या हिंदू-मुसलमान का झगडा था ? आप जरा गौर से सोचिए ! प्रश्न तो ठीक ढंग से फ्रेम कीजिए । Freming of question is more important .इसलिए कारण क्या है वह पहले समझ लेने की आवश्यकता है । केवल हिंदू मुसलमान का सवाल उठाना वास्तविकता से दूर की बात है, क्योंकि ये सारे तो मुसलमानों के आपस के झगडे हैं हिंदुओं के आपस के झगडे हैं ।

झगडे क्यों है ?

झगडे क्यों है, यह प्रश्न है ? इस दृष्टि से कुछ महत्व की बातें मैं बोलना चाहता हूँ । पहली बात, यदी हिंदू एक रिलीजन है, इस्लाम एक रिलीजन है और यदि दोनों अलग-अलग रिलीजन हैं तो दोनों में हमेशा एकता ही होगी यह बात संभव नहीं । कभी होगी, कभी नहीं होगी किंतु हम 'सर्वपंथ समादर मंच' वालों का विश्वास है कि,

हिंदू-मुसलमान एक होंगे इसका कारण है । पहली बात की हम हिंदू-मुसलमानों में यूनिटी नहीं चाहते क्योंकि हिंदू यदि एक यूनिट है, तो मुसलमान दूसरा । हमारे पूर्व के वक्ता ने कहा कि सहिष्णुता रहनी चाहिए, क्या गारंठी है कि सहिष्णुता रहेगी ही । सहिष्णुता न रखने से यदि मेरा लाभ होता है, तो मैं सहिष्णुता क्यों रखूँ ? यदि अलग-अलग दो यूनिट हैं तो दोनों में एकता होनी चाहिए । दोनों में सहिष्णुता होनीं चाहिए ये आप जैसे 'सरमन' देते है, सरमन देते जाइए पर हमेशा ऐसा होगा नहीं । हम हिंदू-मुस्लिम यूनिटी नहीं चाहते हैं । हम समझते हैं कि हिंदू मुस्लिम इज वन सोसाइटी । दोनों में अंतर समझ लीजिए । यूनिटी का मतलब होता है कि दो यूनिट है । हमारा कहना कि दो यूनिट नहीं है, एक ही यूनिट है । और, एक ही के बीच में झगडे हैं । जैसे मुसलमानों में झगडे हैं, हिंदुओं में झगडें हैं वैसे हिंदू-मुसलमान झगडे भी हो सकते हैं । यूनिट एक है इसलिए हम यूनिटी नहीं चाहते । 'वन्नेस' है । हम चाहते नहीं है ...वह वस्तुस्थिति है । It is already there.

लेकिन राजनेता लोगों ने अपने स्वार्थ के कारण झगडे लगाए । केवल हिंदू-मुसलमान में ही झगडा नहीं है । बैकवर्ड-फॉरवर्ड में भी है । दलित सवर्ण में भी है । तरह-तरह के झगडे ये राजनेता अपने स्वार्थ के लिए अपनी गद्दी के लिए लगाते हैं । यह उसी का एक पार्ट है-- It is part of whole. It is not a separate question. एक बडे गहन विशय का यह छोटा हिस्सा है । यह स्वतंत्र और अलग प्रश्न नहीं है । जब संपूर्ण समाज एक है तो ' Not the unity but oneness 'एकता नहीं अपितु एकरसता, एकात्मकता यह सर्वपंथ समादर मंच की भूमिका कृपया आप समझ लीजिए ।

स्वराज प्राप्ति के बाद

दूसरी बात-मतभेद । राजनेता मतभेद खडे करते हैं ये अलग बात है । मुझे इस संबंध में एक घटना याद आती है । १२साल पहले लखनऊ में एक सेमिनार था-जस्टिस मुर्तजा अध्यक्ष थे, मैं वक्ता था । विषय था-माइनॉरिटी एजुकेशन एंड इट्स इन्स्टीच्युशंस। वह विषय आप सबको पता है, इस पर चर्चा है कि आर्टिकल २९, आर्टिकल ३०, आर्टिकल ३१ के कारण माइनॉरिटी एजुकेशन्स वगैरह सारी बातें आप लोग जानते ही हैं, पूरा बताने की आवश्यकता नहीं । पहले हमारा भाषण हुआ । बाद में मुर्तजा हुसैन बोलने के लिए खडे हुए, उन्होंने सीधे मेरी तरफ देखकर कहा कि श्री.ठेंगडी आपके बोलने का यह मतलब दिखता है कि यहाँ का मुसलमान राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल नहीं है । यदि आपका ये कहना है तो मैं आपको प्रति प्रश्न करना चाहता हूँ कि वे इसमें शामिल क्यों नहीं हैं ये बताइए । Who is responsible for it इसके लिये कौन जिम्मेदार है ?

फिर उन्होंने कहा कि मुझे ठीक-ठीक स्मरण है मैं जब बच्चा था, गाँव में था । हमारे गाँव में कोई हिंदू-मुसलमान समस्या नहीं थी । हमारे मुहर्रम में हिंदू शामिल होते थे । होली-दीपावली में हम शामिल होते थे । मैं शहर आया कॉलेज पढाई के लिए तो मैं झुग्गी-झोपडी में रहता था । गरीब था, वहाँ कोई हिंदू-मुसलमान समस्या हमने देखी नहीं ।

स्वराज प्राप्ति के बाद में ये जो हिंदू-मुस्लिम समस्याएँ इतनी आ रही हैं । इसका क्या कारण है ? और, आज की परिस्थिति में मुसलमानों के मुख्य प्रवाह के साथ एकात्म होना चाहिए ये कहने का श्री. ठेंगडी आपको नैतिक अधिकार है क्या ? Have you got moral right to say that Muslim should be one with the national mainstream ? एक कारण बताता हूँ - हम मुसलमान यहाँ बैठे हैं । हमारे पास अलग-अलग राजनीतिक दल के हिंदू नेता आते हैं । फिर हमको बताते हैं कि देखो ये बहुजन समाज आपको खा डालेगा । आपको हमारी पार्टी ही बचा सकती है । हमें वोट दीजिए । एक पार्टी कहती है कि हम आपको तीस 'प्रीविलेजेस' देते हैं, दूसरे पॉलिटिकल पार्टी के हिंदू नेता आकर कहते हैं कि हमारी पार्टी आपको पचास प्रीविलेजेस देती है । क्या आपका कहना है कि जब पावर हंगरी हिंदू राजनीतिक नेता हमारे सामने खुले आम संघर्ष कर रहे हैं कि मुस्लिम वोट प्राप्त करने के लिए मुसलमानों को ज्यादा से ज्यादा प्रीविलेजेस कौन सी पार्टी देगी । आप हमारे सामने यह प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं । और, हम कहें कि नहीं-नहीं हम तो भोले भाले हैं हम तो प्रीविलेजेस नहीं चाहते; हम तो मुख्यधारा में शामिल हो जाएगें । काहे को शामिल होंगे । तो उनका वाक्य था कि आप यदि चाहते हैं कि मुस्लिम मुख्यधारा में आना चाहिए तो आप पहले सत्ता लोलुप राजनीतिक नेताओं को कान पकडकर ठीक कीजिए । उन्होंने कहा कि पहले राजनीतिक नेताओं को मुख्यधारा में लाइए । ये नेता लोग स्वयं ही मुख्यधारा में नहीं है । मुसलमान हैं या नहीं, यह अलग सवाल है । जस्टिस मुर्तजा हुसैन का कहना था कि राजनीतिक नेता सत्ता लोलुप हैं । वे प्रधानमंत्री बनने के लिए देश तक को तोडने के तैयार हो रहे हैं राजनीतिक नेता जब ठीक हो जाएँगे तो मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि एक साल के अंदर-अंदर मुस्लिम राष्ट्रीय मुख्यधारा में शामिल हो जाएँगे । ये बारह साल पहले की बात है । लखनऊ में पब्लिक मीटिंग में ये सब हुआ ।

सत्य की विजय

थोडी मानसिकता समझ लीजिए । What is Psychology ? और, इस दृष्टि से

और कुछ बातें । प्रचार से ज्यादा दिन तक लोगों को गुमराह नहीं किया जा सकता । न सांप्रदायिक प्रचार से न ही सांप्रदायिकता विरोधी प्रचार से । जो सत्य होगा उसी की विजय होगी। जो सत्य है, वो अपने पैरों पर खडा होता है । टी.व्ही, रेडियो और समाचार पत्रों के पैरों पर सत्य खडा नहीं होता । हाँ, सत्य की विजय होने में समय लगेगा । लेकिन विजय सत्य की ही होगी ।

सत्य क्या है ? जरा देखा जाए । हिंदू नाम का एक रिलिजन है तो बाकी रिलिजन के साथ हमेशा एकता होगी ये गलत बात है । फैक्ट ये है कि हिंदू नाम का कोई रिलिजन है ही नहीं, और न कभी रहा होगा । अगर था तो कहाँ गया वो रिलिजन ? हुआ यह कि यूरोपीयन्स आए । उन्होंने यहाँ देखा एक मुसलमान समाज है, कुछ ईसाई है बाकी हिंदू है । उन्होंने सोचा हिंदू कोई रिलिजन होगा क्योंकि यूरोप का बैकग्राऊंड था, इसलिए रिलिजन का अर्थ धर्म किया । जबकि धर्म अलग बात है, रिलिजन अलग । हम लोग भी रिलिजन का प्रयोग धर्म के नाते करते है और हिंदू धर्म, मुसलमान धर्म, ईसाई धर्म ऐसा कहते हैं । परंतु धर्म अलग-अलग नहीं हैं, रिलीजन्स अलग हैं । धर्म का केवल उपासना पद्धति से ही संबंध नहीं, जबकि रिलिजन का संबंध उपासना पद्धति से है । उससे भी ज्यादा- Religion is a relation between the man and its Maker. जो भी हो अल्टीमेट होगा । कोई उसको ब्रह्मा कहे, विष्णु कहे, अल्ला कहे, फादर कहे, याहोवा कहे । तो मनुष्य और अल्टीमेट इसके बीच में जो रिश्ता है वो रिलिजन है । इसलिए डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ने कहा कि Religion is personal, Dharma is social. (पंथ व्यक्तिगत है, धर्म सार्वजनिक है) धर्म केवल उपासना पद्धति भर नहीं । धर्म धारण करने वाली चीज है । व्यक्ति-जीवन को धारण करने वाला व्यक्ति धर्म, परिवार जीवन को धारण करने वाला परिवार धर्म, सामाजिक, राष्ट्रीय जीवन को धारण करने वाला राष्ट्रीय धर्म, मानव जीवन धारण करने वाला मानव धर्म । विश्व की धारणा करने वाला विश्व धर्म एक ही है सबके लिए । और, गलती से उसे यदि हिंदू धर्म कहा गया, इसका कारण यह नहीं कि इसे हिंदूओं ने बनाया । धर्म एक ही है- सृष्टि का धर्म । जैसे गुरुत्वाकर्षण (ग्रैविटेशन) धर्म है । किन्तु पश्चिम में उसका सर्वप्रथम साक्षात्कार न्यूटन को हुआ । इसलिए उसको न्यूटन्स लॉ कहते हैं । इसका मतलब यह नहीं कि न्यूटन के पहले यह नहीं था । वह सनातन है, चिरंतन है । लॉ ऑफ ग्रैविटेशन-गुरुत्वाकर्षण के प्राकृतिक नियम का साक्षात्कारी पुरुष पश्चिम में भले ही न्यूटन था परंतु हमारे यहां पहले ही इसका साक्षात्कार हो चुका था। जैसे लॉ ऑफ रिलेटिविटी सनातन है, चिरंतन

है । पश्चिम में आईन्स्टीन ने पहले पहल उसका साक्षात्कार किया इसलिए लॉ ऑफ रिलेटिविटी को आइन्सटीन्स लॉ कहते हैं । किंतु यह आईन्स्टीन का बनाया हुआ नहीं है, उन्होंने केवल देखा । वैसे ही पहले पहल धर्म देखने वाले हिंदु थे । इसलिए उसे हिंदू धर्म कहा गया । वो धर्म है, हिंदू- धर्म नहीं है । पहले देखने वाले हिंदू थे, यह ऐतिहासिक घटना है ।

हिंदू नाम का रिलीजन नहीं

धर्म एक अलग चीज है- और रिलिजन अलग । और, हिंदू नाम का कौन सा रिलिजन हे मैं चैलेंज देकर बताता हूँ कोई मुझे सिद्ध करे कि हिंदू नाम का कोई रिलिजन है । कौन है इसका प्रॉफेट ? इसका एक बुक कौन सा है ? वेदों को मानने वाले हों या वेदों को न मानने वाले बृहस्पति से लेकर चार्वाक तक मेटेरियलिस्टिक फिलॉसोफी मानने वालों ने कहा वेद वगैरह जब धूर्त लोगों ने बनाया है, हम नहीं मानते इसको । वे भी हिंदू हैं । आपस में झगडा करने वाले अलग अलग रिलिजन्स के हिंदू है । हिंदुओं का रिलिजन्स है वैष्णव है, शैव है, शाक्त है; आस्तिक है, नास्तिक है । नास्तिक भी हिंदू है । अलग-अलग रिलिजन थे हिंदुओं के । हिंदू नाम का कोई रिलिजन नहीं है । जैसे, किराना माल की दुकान पर आप साईन बोर्ड देखते हैं । इस दुकान में सौ चीजें मिलती है, दौ सौ चीजें मिलती हैं, पाँच सौ चीजें मिलती हैं । किन्तु यदि आप १०० रुपये का नोट देकरी कहेंगे कि भई 'किराना' नाम की चीज दीजिए । तो दुकानदार दे सकता है क्या ? क्योंकि किराना नाम की काई चीज नहीं है, किराना एक अंब्रेला नाम है । उस छाते के अंदर सौ, दो सौ, पाँच सौ चीजें आ सकती हैं । वैसे ही हिंदू नाम का कोई रिलिजन नहीं है, किंतु उसमें सभी समायोजन होते हैं, यह किसी संघ के स्वयंसेवक ने नहीं बल्कि महात्मा गांधी ने कहा है कि हिंदू के अंतर्गत इस्लाम, क्रिश्चियनिटी, ज्युडाईज्म आसानी से समायोजित हो सकते हैं यदि ठीक ढंग से समझ लिया तो । महात्मा गांधी ने ऐसा क्यों कहा होगा ? कारण स्पष्ट है कि हिंदू नाम का रिलिजन नहीं है । और, जैसे विभिन्न रिलिजन्स के हिंदू एक दूसरे से समायोजित होते हैं, वैसे ही इस्लाम, क्रिश्चियन, यहोवा भी एकॉमोडेट हो सकते है; ऐसा गाँधी जी का विश्वास था ।

हिंदू दृष्टिकोण

लेकिन जहाँ हिंदू रिलिजन नहीं वहाँ रिलिजन के बार में हिंदुओं का एक दृष्टिकोण है -Hindu view of Religion वह दृष्टिकोण क्या है ? तो, जैसे कोई यदि यह कहता

है कि सालवेशन कैन वी हैड थ्रु लार्ड 'विष्णु' एलोन यह हिंदू स्पिरिट नहीं है । किंतु यदि यह कहता है कि थ्रू लार्ड विष्णु ऑलसो । मोक्ष प्राप्ति केवल विष्णु के द्वारा ही, ये हिंदू स्पिरिट नहीं है; विष्णु के द्वारा भी, शिव के द्वारा भी, दुर्गा के द्वारा भी ये हिंदू स्पिरिट है । दुर्गा के द्वारा ही - ये हिदू स्पिरिट नहीं है । वैसे कोई यदि कहता है कि सालवेशन कैन बी हेड थ्रू मुहम्मद प्रोफेट अलोन नॉन हिंदू है । किंतु वही यदि कहता है कि सालवेशन कैन बी हेड थ्रू मोहम्मद प्रॉफेट आलसो-हंडरेड परसेंट हिंदू है । थ्रू जीसस क्राईस्ट एलोन-नॉट हिंदू । थ्रू जीसस क्राइस्ट ऑलसो परफेक्टली हिंदू । ये थोडी समझ लेने की बात है । आज के राजनेताओं के जो भाषण हैं, बिलकुल गैर जिम्मेदाराना होते है । गैर जिम्मेवार राजनेता, बेईमान राजनेता, प्राइम मिनिस्टर बनने के लिए जनता को गुमराह करते हैं । देश के टुकडे करने वाले, समाज के टुकडे करने वाले राजनेताओं को आप प्रमाण मत मानिए । सत्य क्या है इसको जरा देखिए । तो, इस दृष्टि से हिंदू वे ऑफ रिलिजन है । और, इस दृष्टि से दो रिलिजन में एकता हो, ये मै नहीं कहता क्योकि हिंदू नाम का रिलिजन है ही नहीं और, यदि कोई रिलिजन हो तो उसमें एकता ही होगी ये गारंटी आप दे नहीं सकते ।

मतभेद स्वाभाविक

दूसरी बात देखिए । आपने ठीक बात कही कि भई मतभेद है । अब राजनेता तो जानबूझकर भेदों को उभारते हैं । किंतु वैसे भी मतभेद होते ही है । कहां नहीं होते हैं, परिवार में भी मतभेद होते है । अब पांडवों के जैसा कोई परिवार था । किंतु वहाँ भी मतभेद हुए क्योंकि परिवार में अलग-अलग लोग है, उनकी अलग-अलग प्रवृत्ति हैं, अलग-अलग मानसिक पृष्ठभूमि है, और इसलिए एक ही घटना पर अलग-अलग प्रतिक्रियाऐं हो सकती हैं । द्रौपदी वस्त्र हरण का प्रसंग था । भीम ने कहा कि मैं दुःशासन को पीटता हुँ । युधिष्ठिर ने कहा कि चुपचाप बैठो । भीम ने कहा कि सहदेव थोडा अग्नि लाओ, मैं अपने युधिष्टिर दादा के हाथ जलाना चाहता हूँ । इससे ज्यादा और मतभेद क्या हो सकते हैं ? क्या इसी के कारण एकदम दो गुट हो गए ? फैक्सनलीज्म हो गया है ऐसा नहीं कहा जा सकता । परिवार में भी अलग अलग टेंपरामेंट हैं, अलग-अलग टेंडेन्सी है अलग अलग मेंटल बॅकग्राऊंड है, इसके अनुसार अलग अलग रिएक्शन होंगे ही । परिवार की भावना यह इतनी बलवान है कि सभी मतभेदों को समेटकर परिवार एक हैं । इसलिए पांडवों का परिवार एक रहा ।

ध्येय एक होते हुये भी सबकी भावना एक होते हुए भी इंफैसिस (दबाव, जोर) में फर्क हो सकता है । जैसे कि किसी के घर में लडकी है । विवाह योग्य हो गई है सभी

परिवार वालों की इच्छा है कि अच्छे घर में इसका विवाह होना चाहिए ताकि इसका जीवन सुखी हो और, इसकी शादी अच्छे ढंग से होना चाहिए, ताकि गाँव वाले कह सके कि शादी बहुत अच्छी हुई । लेकिन सबकी इच्छा है । सबका मत एक ही रहेगा क्या ? अनुभव के आधार पर हमारे पूर्वजों ने कहा- नहीं प्रायोरिटीज अलग अलग होती है । अपने विवाह के बारे में लडकी सोचती है कि लडका स्वरुपवान है कि नहीं, लडका हैंडसम है कि नहीं? माने बाकी चीजें उसके सामने नहीं रहती ऐसा नहीं । लेकिन जो उसके सामने प्राथमिकता है कि लडका स्वरुपवान है कि नहीं ? माता का ऐसा नहीं है, माता भी चाहेगी कि स्वरुपवान होना चाहिये । लेकिन, माता की प्राथमिकता रहती है कि परिवार की आर्थिक आमदनी कैसी है । कहीं ऐसा न हो कि वहां शादी होने के बाद सारा जीवन दूसरों के यहां बर्तन मांजने और कपडे धोने में बिताना पडे । पिताजी उससे भी प्रसन्न नहीं हैं । वे कहते है कि आज तो परिवार समृद्ध होगा लेकिन कल यदि अर्थव्यवस्था टूट जाती है, गरीब हो जाता है तो क्या इस लडके में ये ताकत है कि सारी सम्पत्ति खोने के बाद फिर से अपने कर्तृत्व के आधार पर वह अपने परिवार को उपर ला सकता है । तो- एज्युकेशनल क्वालीफिकेशन उसका क्या है यह पिता की प्राथमिकता रहती है । याने बाकी बातें वो मानता नहीं ऐसा नहीं है । वह भी चाहेगा कि लडका स्वरुप में अच्छा हो । आज की फाईनेन्सियल पोजिशन अच्छी हो, लेकिन इससे पिता संतुष्ट नहीं । तो लडके के अंदर एक बार गिरने के बाद फिर से उठकर खडा होने की ताकत है कि नहीं यह पिता देखता है । अब बाकी जो रिश्तेदार हैं उन्हें इतने गहराई में जाने के लिये उनकी इच्छा भी नहीं और टाईम भी नहीं है । वे केवल चाहते हैं कि हमारे बराबरी का खानदान हो, बाकी सब चल जायेगा । आप और हम भी तो लडकी के विवाह में सहानुभूति रखते हैं । किन्तु हम क्या चाहते है ? तो कहा गया है कि 'मिष्टान्नं इतरे जनाः' । जलेबी कैसी है । लड्डु कैसा था । हमारा कन्सीडरेशन इतना ही है-

कन्या वरयते रुपम् माता वित्त पिताश्रृतम्
बांधवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्नं ईतरे जनाः ।

अर्थात् कन्या रुप चाहती है, तो माता धन, पिता ज्ञान, बांधव कुल, तो अन्य लोग मीठा भोजन चाहते है ।

तो सारे लडकी का अच्छा चाहते है, लडकी की भलाई चाहते हैं । लेकिन हरेक की प्राथमिकता अलग अलग है तो इसके कारण एकदम यह समझना कि मतभेद हो गये है ऐसा नहीं है । मतभेद अलग बात है । मनभेद अलग बात है ।

जहां तक मतभेद का सवांल है तो परिवार का क्या आप में से कई लोगों ने अनुभव किया होगा कि खुद का खुद के साथ भी मतभेद होता है । आप जरा अपने अपने जीवन का विचार किजिए।

हमारे एक नेता मित्र थे । उनको डायबीटिज था । परहेज नहीं करते थे । डायबीटिज बढने लगा । आखिर डॉक्टर ने उन्हें कहा कि देखो अब मैं वार्निंग देता हूँ । अभी यदि पथ्य का पालन नहीं किया तो आप मर जाओगे । स्पष्ट कहा । तो थोडा सा असर हुआ । फिर नेता ने तय किया अब मीठा नहीं खाना चाहिये । एक दिन वे प्रवास में जा रहे थे । मैं अपने प्रवास में जा रहा था । संयोग से मैं उनके डब्बे में चला गया आगे हम दोनों को दूर तक जाना था । बीच में एक स्टेशन पर उनके कुछ लोग उनका सम्मान करने के लिये आये थे । हार वगैरह साथ में लाए थे । नेता नाराज हो गया और कहा - तुमने पुष्प हार लाया उपहार नही लाया ? एक बोला 'नहीं साहब उपहार नहीं लाया' । फिर एक पुराने कार्यकर्ता ने उनके हाथ में एक डिब्बा दिया । नेता ने पूछा क्या है ? तो कार्यकर्ता ने कहा 'ये बर्फी का डब्बा है '। नेता बोले - बर्फी का डब्बा है ? 'तु मेरे दुश्मन हो, मुझे मारना चाहते हो ? डाक्टर ने कहा है कि मैं यदि मीठा खाऊँगा तो मर जाऊँगा । तुम चाहतें हो कि मुझे मरना चाहिए' ।

वह कार्यकर्ता नेता का स्वभाव जानता था उसने सब सुन लिया और फिर कहा कि जी नहीं, आप जानते नहीं । ये बर्फी की एकदम नयी वेराइटी है । ऐसी बर्फी आपने कभी जीवन में खायी नहीं होगी । अच्छा नई वेराईटी है फिर मेरे बिस्तर पर रख दो । उसने बर्फी बिस्तर पर रख दी ।

अब गाडी आगे चलने लगी । मुझे भी लालच हो गया कि भई ये डिब्बा है, तो कम से कम बर्फी की एक दो पिसेस मुझे भी मिलेगी । आपको आश्चर्य होगा एक भी पीस मुझे नहीं मिला । इसका मतलब क्या है । कि खुद का खुद के साथ मतभेद हो सकता है । पहले बर्फी नहीं खायेंगे । फिर नयी वेरायटी है 'ठीक है' । चुपके से यदि खा लेंगे, दवा ले लेंगे । बाद में इन्सुलिन के चार इंजेक्शन लेंगे । आपत्ति क्या है ? तो खुद का खुद के साथ भी मतभेद हो सकता है । तो इसमें ये समझना कि मतभेद हो गया, झगडे हो गये ऐसा समझना उचित नहीं ।

और इस दृष्टि से मान लीजिए यहाँ कोई मुसलमान नहीं । सारे हिन्दू हैं तो हमेशा एक ही मत रहेगा क्या ? हर विषय पर अलग-अलग मत होते है । वे कहते हैं कि ऐसी

पार्टी होनी चाहिये जिसमें कोई मतभेद नहीं हो । मैने कहा कि कैसे होगा ? हमारा प्लुरलिस्टिक- बहुआयामी समाज है । रिलिजन की बात छोडिये । उदाहरण के लिए समझिए की एक ही राजनीतिक दल है । मान लीजिए उस दल के मीटिंग में प्रश्न उठता है कि चंडीगढ कहाँ जाना चाहिये । हरियाणा या पंजाब, किसमें जाना चाहिए । सौ लोगों ने कहा कि पंजाब को देना चाहिये । ऑल राइट ये सौ लोगों का एक गुट हो गया। अगला सवाल आया कि एज्युकेशनल सिस्टम में १०+२+३ ये कायम रहे या उसको खत्म किया जाय । आप क्या समझते है कि चंडीगढ को पंजाब में देना चाहिये ऐसा कहने वाले सौ लागों का ग्रुप १०+२+३ के बारे में एक ही ग्रुप में रहेगा । उसमें से कुछ कहेगा ये रहना चाहिये कुछ कहेगा ये नहीं रहना चाहिये । मान लिजिए एक ग्रुप कहते है कि १०+२+३ खत्म होना चाहिए जिसमें सौ लोग हैं । फिर सवाल आया कि टैक्सेशन में डायरेक्ट टैक्सेशन ज्यादा रहें या इनडायरेक्ट टेक्सेशन ज्यादा रहें ? आप क्या समझते है कि, जो कह रहे है कि १०+२+३ खत्म होने चाहिये ऐसे सौ लोग टैक्सेशन के सवाल पर एक ही ग्रुप में रहेंगे ? उसमें से कुछ कहेंगे डायरेक्ट कुछ कहेंगे इनडायरेक्ट टॅक्सेशन । और मान लिजिए सौ लोग कहते हैं इनडायरेक्ट टैक्सेशन नहीं होना चाहिये । क्या वे सारे लोग यदि राम जन्मभूमि का सवाल आया तो सब एक ही ग्रुप में रहेंगे ? कोई कहेंगे होनी चाहिये । कोई कहेंगे नहीं होना चाहिए । हमारा प्लुरलिस्टिक समाज है । और बहुआयामी समाज में सोचना कि मतभेद नहीं होना चाहिये । यह गलत है । मतलब है कि We are quarrelling with the facts. असलियत ही ऐसी है, वो केवल रिलिजन के कारण नहीं है । समाज ही प्लुरलिस्टिक है ।

तो प्रश्न को ठीक ढंग से समझने की आवश्यकता है और इसलिये इसको केवल हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न के रुप में देखना उचित नहीं है । हमारी बात वननेस एकरसता, एकात्मकता की है । आप जरा दोनों में अंतर समझ लिजिए । Whole society is one. We donot want society to unite. इसलिये हम सहिष्णुता शब्द को पसंद नहीं करते । क्यों सहिष्णुता ? इसलिये हमने समभाव शब्द भी नहीं लिया। हमने कहा समादर । दोनों में अंतर है । समभाव में समता है, समादर में हम समझते है कि आदर की भावना से हम दूसरे को देखते है । हमारी शब्दावली देखिये । टर्मिनोलॉजी इज वेरी इम्पॉर्टन्ट । शब्दावली का अतीव महत्व है । दूसरी बात यह है कि हमें आज की परिभाषा में बोलना है। हमारी टर्मिनोलॉजी हमारी भावना हमने बताई ।

किन्तु आज जो घोर सांप्रदायिक है और जो जाति सांप्रदायिकता फैला रहे है, वे ही कह रहे हैं कि हिंदू-मुस्लिम युनिटी हो । जो दलित सांप्रदायिकता फैला रहे हैं वे ही कह रहे हैं हिंदू-मुस्लिम युनिटी हो । सांप्रदायिकता नष्ट हो । ये डेमोनिंग है, ऐसा नहीं होना चाहिए । यदि हमें वास्तव में सोचना है तो, इसके लिये केवल ऊपर से उसके पत्ते काटने से विषय वृक्ष नष्ट नही होता । विषय वृक्ष की जड कहाँ है यह हमें देखना पडेगा । जड से उखाडना पडेगा । तो जड कहाँ है ? इसका स्टडी जबतक नहीं होता, अध्ययन नहीं होता, तब तक इस विष वेल को नष्ट नहीं किया जा सकता है । तो संक्षेप में हम थोडा देखें कि इसकी जड कहाँ है ?

विष बेल की जड कहाँ है ।

पुरानी जड है । उसको जब तक नहीं समझते तब तक केवल पत्ते काटने से ओर भाषण देने से काम नहीं होगा । कहाँ से डेविएशन शुरु हुआ है । ये जानना चाहिये । संक्षेप में मैं बताना चाहता हूँ । पहले यहां जो स्वराज्य था। १८१८ में पूणे में जो पेशवाओं का हेडक्वॉर्टर था, शनिवार बाडा पर जो भगवाध्वज लहरा रहा था उसको नीचे लाया गया । अंग्रेजों का यूनियन जैक वहाँ लहराया गया । कुछ क्षण हमारे स्वराज्य की समाप्ति हुई । अंग्रेजों का शासन शुरु हुआ । तो वो क्षण कि भगवा ध्वज स्वराज्य का नीचे उतारा गया । अंग्रेजी साम्राज्य का यूनियन जैक ऊपर चढाया गया । उसका थोडा यदि विचार करेंगे तो ध्यान में आयेगा कि अंग्रेजों की नीति क्या थी । ये काम किसने किया ? किसी अंग्रेज ने नहीं किया। अंग्रेजों के कहने पर एक हिन्दू ने इतना ही नहीं, पेशवा के जाति वाले एक हिन्दू ने जिसका नाम था बालाजीपन्त नातू । पेशवा के जाति का था । उसने भगवे ध्वज को नीचे उतारा । उसने यूनियन जैक को लहराया । विचार कीजिए कि अंग्रेजों की नीति क्या थी ?

दूसरा बिन्दू लीजिए । कहा जाता है कि मुस्लिम कम्युनलीज्म के पहले शानयाने-सर सैयद अहमद थे । प्रारंभ से ऐसा था क्या ? सर सैयद अहमद के पहले भाषण रहे है कि हिन्दू और मुसलमान एक ही शरीर की दो आँखे हैं । एक ही देश का शरीर है। उसकी दो आँखें हिन्दू और मुसलमान है । कोई भी आँख यदि घायल हो जाती है तो दूसरी आँख को धक्का लगेगा ही । ये भाषण देने वाले सर सैय्यद अहमद थे । उनका संपर्क हो गया अंग्रेजों के साथ । भाषा बदल गई । ये ध्यान में रखिये । किंतु दोनों के बीच में जो प्वाईंट है, वह १८१८ शनिवार वाडा इधर सर सैयद अहमद, इसके बीच में जो है वह ध्यान में रखने लायक है ।

१८१८ के बाद और १८५७ के पूर्व स्वातंत्र्य संग्राम ऐसा नहीं कहा जा सकता। छिट-पुट लडाइयाँ, अलग-अलग जातियों ने अलग टाईम में अंग्रेजों के खिलाफ की होगी। बेशक स्वातंत्र्य संग्राम १८५७ का था । अंग्रेजों ने दुनियाँ में इसको मिसइंटरप्रेट किया । हिन्दुस्तान में किया । और अंग्रेजों की मानसिक गुलामी करनेवाले अंग्रेजी पढे लिखे लोगों ने अंग्रेजों की टर्मिनोलॉजी स्वीकार की और कहा कि यह सिपाही लोगों का विद्रोह था । यह सिपाही लोगों का विद्रोह नहीं था अपितु यह स्वातंत्र्य संग्राम था । सावरकर ने पहली बार एक किताब लिखकर सिद्ध किया कि १८५७ का युद्ध भारत का स्वतंत्रता संग्राम था । सावरकर की किताब सरकार ने पब्लिश होने के पहले प्रेस्क्राईब की थी । उन्होंने स्पष्ट कहा कि ये स्वतंत्रता संग्राम ही था, सिपाही लोगों का यह विद्रोह नहीं था। १८५७ के लडाई का स्वरुप क्या था ? इसमें नाना साहब पेशवा, सेनापति तात्या टोपे, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई इन तीनों ने घोषणा की थी कि बहादुरशाह जफर हिन्दुस्थान के बादशाह हैं । दिल्ली के बादशाह के नाते इन्होंने बहादुरशाह जफर के नाम की घोषणा की थी । जफर इन लोगों के साथ थे । अंग्रेजों के खिलाफ लडने में बहादुरशाह जफर शामिल थे । लेकिन जब सारा मामला उल्टा होने लगा तो सावरकर जी ने अपने इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस में लिखा है कि कोई एक उनसे सहानुभूति रखने वाले जफर के पास गये और कहा कि-

दमदमे में दम नहीं अबखैर मांगो जान की ।

ए जफर ठंडी हुई शमशेर-हिंदूस्तान की ।

हिन्दुस्तान की शमशेर ठंडी हो गई अब अंग्रेजों के पास जाकर अपने जान की खैर माँगिये । तो बहादुरशाह जफर ने जबाब दिया -

गाजियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की ।

तब तो लंदन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की ॥

उस समय ये तथाकथित सेक्युलरिस्ट, बेईमान सेक्युलरिस्ट राजनेता उस समय नहीं थे । बहादुरशाह जफर ने कहा कि तब तो लंदन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की यह वायुमंडल था ।

स्वार्थी नेता लोग

सारे जहाँ से अच्छा के निर्माता मुहम्मद इकबाल का पूर्व वक्ता ने उल्लेख किया। आपको आश्चर्य होगा कि अंग्रेजों के डिवाइड एंड रुल पौलिसी के कारण भेद करो,

झगडे लगाओ, और शासन करो, इस नीति के कारण केवल मुसलमानों में नहीं, हर जाति में, हिंदू भी अलग अलग हो गये थे ।

क्या आप समझते है कि आज की परिस्थिति में हम हिंदू है ऐसा कहना लाभदायक है । आज तो बिल्कुल नहीं । यहाँ तक कि कुछ साल पूर्व रामकृष्ण मिशन के लोगों ने भी कलकत्ता हाईकोर्ट के सामने आफिडेविट दिया था - हम तो हिन्दू नहीं, हम तो रामकृष्णाइट हैं । इसलिये हम माइनोरटी कम्यूनिटी है । कारण आज के संविधान में माइनोरटी बनने में हरेक को लाभ है । जहाँ रामकृष्ण मिशन के संन्यासी कहते है हम हिंदू नहीं, रामकृष्णाइट है । मुसलमानों ने कहा तो कौन सी बडी बात हो गयी । आज का कांस्टट्युशन ही ऐसा है जिसमें हिंदू न होना लाभदायक है । हिंदू होना गलत काम है । तो इस परिस्थिति में शुरु से डिवाईड एंड रुल पौलिसी चल रही थी, और कुछ मुसलमान ऐसा समझते थे कि भई अलग रहने से हमारी सौदे की ताकत रहेगी, 'बारगेनिंग पावर' रहेगी । हम एक हो जायेंगे तो हमारी पावर क्या रहेगी ? मुझे स्मरण होता है कि बाबा साहब आंबेडकर की मृत्यु के पश्चात जो रिपब्लीकन पार्टी वगैरह का चला तो हमारे बच्छराज जी व्यास का और मेरा सभी अम्बेडकराइट्स ऐ साथ अच्छा संबंध था । बच्छराज जी एक अम्बेडकराईट नेता को परम पूजनीय गुरुजी के पास लेकर गये । गुरुजी ने कहा कि भई तुम्हारा सब कहना ठीक है । दलितों पर अन्याय हुआ उसका परिमार्जन होना चाहिये, उसके लिए क्या-क्या होना चाहिये आपने सब ठीक कहा लेकिन आप अलग पार्टी क्यों बना रहे हैं ? शिड्यूल कास्ट फेडेरेशन बनाकर किसी नेशनल पार्टी में शामिल होइये । किसी में भी शामिल हो जाइये । उस समय जनसंघ था। बोले 'आप जनसंघ में जाईये, कांग्रेस में जाईये, शोसलिस्ट पार्टी में जाइये, कम्युनिस्ट पार्टी में जाईये ये सब नेशनल पार्टी थे ।' किसी भी नेशनल पार्टी में जाकर आप यदि ये बात बोलेंगे तो नेशनल पार्टी होने के कारण इस बात का प्रभाव ज्यादा होगा । आप नेशनल पार्टी में शामिल क्यों नहीं होते ? तो उस नेता ने स्पष्ट कहा गुरुजी आप हमको मूर्ख मत समझिये । आज हम शिड्यूल कास्ट फेडरेशन बनाये है । हमारे 'शिड्यूल कास्ट' में एजुकेटेड लोगों की संख्या कम है । हम थोडे एजुकेटेड लोग आसानी से नेतृत्व कर सकते है । हम नेशनल पार्टी में जाएंगे तो हमें कौन पूछेगा ? वहाँ क्वालिफीकेशन की दृष्टि से हमसे अधिक कई बडे लोग हैं । हम तो पिछडा, बैक बेंचर बन जायेंगे । हमें यदि लीडर के नाते रहना है तो सेपरेट शिड्यूल कास्ट फेडरेशन रखना ही आवश्यक है ।

ऐसा समझने वाले मुस्लिम लोग भी थे । किन्तु समझदार मुस्लिम लोग राष्ट्रीय धारा में थे, राष्ट्रवादी थे, कांग्रेस में थे । कई लोगों को आश्चर्य होगा कि जिन्ना वाज ए स्टॉन्च नेशनलिस्ट, मु. इकबाल वाज ए स्टॉन्च नेशनलिस्ट, शौकत अली मो. अली वेअर नेशनलिस्ट । यहाँ तक कि अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन १९१९ में हो रहा था, उसी समय छिंदवाडा जेल में शौकत अली और मुहम्मद अली थे उनकी रिहाई भी हुई । कहीं इधर उधर न जाते हुए वे दोनों सीधे अमृतसर पहुँचे और सबके सामने शौकत अली मुहम्मद अली ने, उस समय लोकमान्य तिलक जो राष्ट्र नेता थे उनके चरण स्पर्श करते हुए वहाँ बैठ गये । ये शौकत अली मुहम्मद अली थे । बैरिस्टर जिन्ना तिलकजी के भक्त थे, राष्ट्र नेताओं में उनकी गिनती थी । जिस समय लाला लाजपत राय अमेरिका छोडकर फॉर द फर्स्ट टाइम अमरीका से आये, मुम्बई बंदरगाह पर उनका स्वागत करना था । कांग्रेस ने अपने ओर से तीन आदमी को डिपुट किया था । एक थे लोकमान्य तिलक, दूसरे थे डॉ.एनी बेझैंट, तिसरे थे बैरिस्टर जिन्ना । इससे आपको कल्पना आयेगी सर्वप्रथम सेपरेट इलेक्टोरेट की जब बात की गई तब बैरिस्टर जिन्ना ने जगह जगह मुसलमानों की सभाएं लेकर उन्हें समझाया कि सेपरेट इलेक्टोरेट गलत है । आज लोग ये विचार जानते नहीं । इसी कारण इसका बीज कहाँ है, जड कहाँ है ये नहीं जानते । ये मुहम्मद इकबाल की एवं बाकी राष्ट्रीय मुसलमानों की प्रवृत्ति थी ।

अंग्रेजोद्वारा बीजारोपण

अंग्रेजों ने चाल चली । उन्होंने कहा कि हिंदू मुसलमान यदि एक हो जायेंगे तो हम उन्हें स्वराज देकर चले जायेंगे । अब रणनीति में उसको जबाब देना था । लोकमान्य तिलक उस समय राष्ट्र नेता थे । लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन में १९१६ में वहाँ उन्होंने हिन्दु-मुस्लिम पैक्ट किया । लेकिन मुसलमान के प्रतिनिधि के नाते फिरंगी ने किसको रिकागनाईज्ड किया । वो राष्ट्रवादी थे । कांग्रेस के अनुकूल थे, कांग्रेस में थे । उनको प्रतिनिधि के नाते मान्यता दी । ये तो केवल जबाब देना था । वे लोग अंग्रेजों को जानते थे कि केवल पैक्ट होने से अंग्रेज जाने वाले नहीं ।

तिलक जी के मृत्यु के बाद एक नया युग शुरु हुआ जिसको गांधी युग कहते है । प्रारंभ से ही पहले की जो पॉलिसी थी उसको छोडकर दूसरी पॉलिसी शुरु हुई । सबसे पहले खिलाफत मुवमेंट के बारे में बैरिस्टर जिन्ना ने पब्लिकली गांधी जी को कहा था

लगाऐंगे । ऐसा जब बहुत साल चला तब जिन्ना है, मुहम्मद इकबाल है । नहीं तो सब को आश्चर्य होता है, कि एक समय कहनेवाला 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ता हमारा' उसी ने पाकिस्तान की संकल्पना क्यों दी होगी ? उसका कारण है कि कांग्रेस की नीति ही ऐसी थी जो लात मारेंगे उनके सामने झुकना ।

और फिर मुसलमानों के साथ डायरेक्टली कांटेक्ट न करते हुए ये जो सौदेबाजी करने वाले लोग बीच में थे उनके साथ केवल सौदे की बात करना, ये कांग्रेस ने अपनी नीति चलाई । राऊन्ड टेबल के पश्चात जो कम्युनल एवार्ड आया, जो स्पष्ट रुप से देश को तोडनेवाला था । कम्युनल एवार्ड में ही पाकिस्तान का बीजारोपण है । लोगों ने कहा कि इसका विरोध करें । गांधीजी ने और कांग्रेस ने कहा कि विरोध करेंगे तो मुसलमान नाराज हो जायेंगे । किंतु स्वीकार भी नहीं कर सकते । क्योंकि इतना स्पष्ट था कि यह देश विरोधी है । स्वीकार भी नहीं और विरोध भी नहीं । इसके कारण ऐसी विचित्र भूमिका ली । बहुत लोगों को यह भूमिका मालूम नहीं कि कम्युनल एवार्ड के बारे में उसके बाद आने वाले चुनाव के समय कांग्रेस की भूमिका थी । We neither accept nor reject Communal Award" हम कॉम्युनल एवार्ड का स्वीकार भी नहीं करते, अस्वीकार भी नहीं करते । लोगों ने कहा ये कैसे हो सकता है ? चोर मकान में आता है। हम कहते है कि चोर के बारे में भूमिका क्या है ? आप कहते हैं हम उसका स्वागत भी नहीं करते, वह बाहर जाय ऐसा भी नहीं कहते । ये कोई नीति हो सकती है । Either accept or reject (स्वीकार करो या विरोध करो) । एक्सेप्ट करना संभव नहीं था क्योंकि स्पष्ट रुप से वह राष्ट्र विरोधी था और रिजेक्ट करने की हिम्मत नहीं थी । क्योंकि मुस्लिम वोट्स है । इस भूमिका में चुनाव होने थे ।

चुनाव होने के बाद एक घटना हुई । छोटी सी घटना जो इतिहास बारीकी से पढेंगे उनको ये बात ध्यान में आयेगी । जिसके कारण पं.जवाहरलाल नेहरु जैसे व्यक्ति को भी सत्य का साक्षात्कार कुछ समय में हुआ । क्या हुआ था । कम्युनल एवार्ड के चुनाव के समय मुस्लिम लीग को बहुत कम वोट मिला । कम जगह उनको सत्ता मिली । कांग्रेस ज्यादा आ गयी । ऐसे समय में यु.पी. में घटना ऐसी हुई कि यू.पी. के कांग्रेस नेताओं ने मुस्लिम लीग यू.पी. जो थी उनके साथ समझौता किया था कि भई आपका और हमारा युनाईटिड फ्रंट नहीं हो सकता । आप भी खडे कीजिए हम भी खडे करेंगे । किंतु एक करें कि जो हमारे महत्व की सीटें है जहां हमारे अच्छे नेता खडे है वहां मुस्लिम लीग का

कमजोर कैन्डिडेट खडा किजिए ताकि हमारा नेता चुनकर आ जाय । तो उन्होंने वो माना और उनके अच्छे-अच्छे लोग चुनकर आ गये कांग्रेस के चुनकर आने के बाद फिर यहीं से कांग्रेसी नेता मुकर गये । उन्होंने कहा था कि ऐसा यदि आप करेंगे तो हम आपके एक दो लोग मंत्रीमंडल में लेंगे, केबिनेट में लेंगे । लेकिन जब कांग्रेस की स्पष्ट मेजोरिटी आ गयी, तो वो मुकर गये और उन्होंने वो मानने से इन्कार किया । फिर मुस्लिम लीग ने घोषणा की कि हमारे साथ जो सेपरेट एग्रीमेंट था, अब ये मुकर रहे हैं, ये विश्वासघात है और फिर जिन्ना ने, अन्य लोगों ने इतना जोरदार प्रचार किया कि अगले इलेक्शन में मुस्लिम लीग की मेजोरिटी कई प्रदेशों में आ गयी ।

साक्षात्कार

कभी न कभी साक्षात्कार हो जाता है । उस समय जवाहरलाल जी को साक्षात्कार हुआ था । नवम्बर १९३७ में उनका एक बहुत महत्वपूर्ण स्टेटमेंट आया था । कांग्रेस सेशन में भी उसकी चर्चा हुई, देश भर में भी उसकी चर्चा हुई । उनका स्टेटमेंट यह था कि मुसलमानों के बारे में कांग्रेस ने अभी तक जो नीति अपनायी वह गलत थी । हमलोगों ने, जो मुसलमानों को हिन्दूओं से अलग रखने में ही अपना राजनीतिक स्वार्थ मानते हैं, ऐसे लोगों को मुसलमानों का प्रतिनिधि समझकर उनके साथ सौदेबाजी की। जवाहरलाल जी ने उस स्टेटमेंट में कहा कि 'सौदेबाजी में ऐसा कुछ निकल ही नहीं सकता क्योंकि वो अपना राजनीतिक स्वार्थ देखेंगे जो मुसलमानों को हिंदूओं से अलग रखने में है । तो हमारा जो अबतक का एप्रोच था वो गलत था । अब हमें सही एप्रोच लेना चाहिए । और उस समय जो जवाहलाल ने कहा वह सही एप्रोच था। उन्होंने कहा कि ये जो ठेकेदार हैं ये निहित स्वार्थ वाले ठेकेदार हैं इनको इग्नोर कीजिए । इनकी फिकर न कीजिए। जनता में वह यह संदेश दे रहे थे कि कांग्रेस इज ए नेशनलीस्ट पार्टी शुड हैव मुस्लिम मास कॉन्टेक्ट । ये उनके शब्द थे । जिनके बाल मेरे जैसे पके होंगे उनको ये याद होगा और वो सही रास्ता था, सौदेबाजी नहीं । उनको समझाना कि राष्ट्रवाद क्या है और जवाहरलाल जी ने आशा प्रकट की थी कि वो समझ जायेंगे कि हम डायरेक्टली मुसलमान आदमी के पास पहुचेंगे तो नेताओं को नहीं समझा सकते क्योकि वो सौदेबाजी करेंगे ।

लेकिन दुःख की बात है कि सन १९३७ में ये कहा गया और थोडा मुस्लिम मास कोन्टैक्ट का प्रोग्राम कांग्रेस ने शुरु भी किया, इस बीच दूसरा महायुद्ध शुरु हुआ । फिर महायुद्ध के कारण एकदम कई गडबडियाँ शुरु हो गई और मुस्लिम मांस कांटेक्ट

प्रोग्राम के लिये समय ही नहीं मिला । बाद की सारी घटनाए आपके ख्याल में है । वो जो जवाहरलाल जी को साक्षात्कार हुआ वह योग्य था । उसका सर्वपंथ समादर मंच के साथ कन्टीनुऐशन है, ऐसा आप कह सकते हैं । इसीलिए नेताओं के साथ, ठेकेदारों के साथ बातचीत मत करो । अपनी भूमिका क्या है यह सामान्य मुस्लिम आदमी को समझाओं । वह समझ सकता हैं । क्योंकि जैसा जस्टिस मुर्तजा हुसैन ने कहा कि, वास्तव में झगडे नहीं है । ये नेता लोग झगडे लगा रहे हैं । यही भूमिका लेकर हम लोग काम कर रहे हैं ।

समरसता आवश्यक

मतभेद परिवार में भी होते है, मनभेद नहीं होने चाहिये । यदि अलग अलग रिलिजंस होंगे तो एकता होगी ही ऐसी गारंटी नहीं हो सकती । क्योंकि हिंदू नाम का रेलिजन नहीं है और सौभाग्य की बात है कि दो साल पहले सुप्रीम कोर्ट में निर्णय आया कि हिन्दू इज नॉट ए रिलिजन, हिन्दू इज ए वे ऑफ लाईफ । उसके बाद सवा साल पहले दूसरा सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आया है कि धर्म अलग है रेलिजन अलग है । वैसे सुप्रीम कोर्ट ने कहा नहीं होता तो सत्य कुछ अलग होता, ऐसा नहीं है । लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने भी ये दो बातें इन्डोर्स की कि, हिन्दू इज नॉट ए रिलिजन हिन्दू इज वे ऑफ लाईफ । धर्म अलग बात है कि रिलिजन अलग बात है, और इसीलिए हमने कहा कि हम प्रार्थना करते है कि युनिटी की बात मत करो । यदि दो अलग यूनिट होंगे तो युनिटी हो सकती है । हम दो यूनिट नहीं मानते । हम वननेस में विश्वास करते हैं । समरसता मानते है । उसी प्रकार ज्यादा देर तक सहिष्णुता नहीं चल सकती । यदि सहिष्णुता रखने से लाभ होगा तो सहिष्णुता रखूंगाँ । लाभ नहीं होगा तो सहिष्णुता क्यों रखूगाँ ? थोडा आपके प्रभाव से आपको बाबू बेटा कहकर थोडा समय मांग लूंगा ज्यादा नहीं मांगा जा सकता ।

तो यूनिटी की बात नहीं । हिंदू मुस्लिम युनिटी का मतलब कि हिंदू अलग यूनिट मुस्लिम अलग युनिट, गलत बात है । सम्पूर्ण समाज एक है । और इसलिये समभाव नहीं समादर । इस भूमिका को लेकर हम लोग काम कर रहे हैं । इसी भूमिका को लेकर मैं समझता हूँ कि गणेश शंकर विद्यार्थी का प्राणार्पण हुआ । भाषणों से नहीं लेखों से नहीं, मुस्लिम लोगों के इकट्ठा वोट बैंक प्राप्त करने के लिये बेईमानी के साथ उनका प्राणार्पण नहीं हुआ । गैर जिम्मेवार राजनेताओं ने जो सांप्रदायिकता विरोधी प्रचार सेकुलरिज्म के

नाम से किया है उनका न सेकुलरिज्म से मतलब है न साम्प्रदायिकता से मतलब है । उनका मतलब प्राईम मिनिस्टर की गद्दी के साथ है । ऐसे बेईमान नेताओं के भाषणों की तरफ ध्यान न देते हुए हम सभी को समझें । और ये समझाने का काम केवल हिंदु तथा मुस्लिम के बस में नहीं है । हिंदूओं में भी कितने झगडे हैं मुसलमानों में भी कितने झगडे हैं ।

इसलिए हमने सामाजिक समरसता मंच की स्थापना की थी । १९९१ में इत्तिफाक से ऐसा हुआ कि डॉ. अम्बेडकर जी का अंग्रेजी कैलेन्डर के मुताबिक जन्मदिन १४ अप्रैल और डॉ. हेडगेवार जी का हिंदू कैलेन्डर के मुताबिक जन्मदिन वर्ष प्रतिपदा दोनों एक ही दिन आये । तो उस दिन हम लोगों ने सामाजिक समरसता मंच की स्थापना की थी । केवल हिंदूओं में एकता निर्माण करने के लिये और वननेस का साक्षात्कार हिंदूओं को देने के लिये । तो दोनों आंदोलन सामाजिक समरसता मंच और सर्वपंथ समादर मंच दोनों की स्थापना की है । पूर्व वक्ता ने एक बात ठीक कही कि एज्युकेशन की आवश्यकता है, प्रोपेगंडा अलग बात है, एज्युकेशन अलग बात हैं। प्रोपेगंडा का मतलब इतना ही है कि मेरी पार्टी अच्छी है, बाकी सब खराब प्रचार याने आत्मस्तुति, परनिंदा । एज्युकेशन का मतलब है, कि वास्तव में चारों ओर क्या-क्या कष्ट हैं ये लोगों को समझाना और आज भी जो हिंदूस्थान में सारे झगडे चल रहे हैं इसका एक कारण समझ लिजिए वह कारण बताकर मैं मेरा भाषण पूरा करुँगा ।

ब्रिटेन और भारत

हमने ब्रिटिश पार्लियामेंटरी सिस्टम लायी । ये सिस्टम हमारे देश के अनुकूल नहीं है । १९०८ में 'हिंद स्वराज्य' नाम की पुस्तिका में महात्मा जी ने लिखा था कि ब्रिटिश पार्लियामेंटरी सिस्टम भारत के योग्य नहीं है । ये सिस्टम आ जायेगी तो वोटर्स की अवस्था वेश्या के समान हो जायेगी । Which can be purchased and sold. यह पद्धति संयुक्तिक नहीं । यहाँ गवर्नमेंट ऑफ इन्टरेस्ट काम करेगा।इसका मुझे विश्लेषण देने की आवश्यकता नहीं है । गवर्नमेंट ऑफ इन्ट्रेस्ट का मतलब होता है फंक्सनल रिप्रेजेंटेशन Functional Representation १९२६ में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जेल में थे वहाँ उन्होंने आटो बायोग्राफी लिखी । उन्होंने कहा यदि हम ब्रिटिश पार्लियामेंट की सिस्टम अपनाते हैं तो सर्वप्रथम चुनाव के समय भ्रष्टाचार बढेगा और फिर भ्रष्टाचार इतना बढता जायेगा कि चारों ओर से देश में भ्रष्टाचार व्याप्त होगा । आज हमारे नेता भ्रष्टाचार विरोधी भाषण कर रहे हैं। लेकिन स्वराज्य प्राप्ति के ६ साल पहले दुनियाँ के एक श्रेष्ठ

विचारक मानवेन्द्र नाथ राय उन्होंने एक किताब लिखी है । 'पार्टी, पावर एन्ड पौलिटिक्स'। उन्होंने दुनिया के बहुत सारे कांस्टिच्यूशन का अध्ययन किया था । उन्होंने स्पष्ट कहा कि हम यदि ब्रिटिश पार्लियामेंटरी सिस्टम लाते हैं, हिंदुस्तान में या किसी भी देश में यह सिस्टम तब तक यशस्वी नहीं हो सकती जब तक पब्लिक एज्युकेशन हंडरेड परसेंट नहीं है ।

आज हमारे नेता हमको क्या बता रहे हैं कि ये सिस्टम यदि इग्लैंड में काम करती है तो हमारे यहां क्यों नहीं काम कर सकती । वास्तव में विन्स्टन चर्चिल ने कहा कि यह सिस्टम सबसे अच्छी है, इसलिये नहीं, कम से कम खराब है इसलिये यह स्वीकार की है । वे भी दोषोंको जानते हैं । खैर, अब इग्लैंड में काम करती है इसलिये हमारे यहां क्यों नहीं काम करती ऐसा ये कह रहे हैं । श्री. एम.एन.राय ने कहा कि इंग्लैड में पब्लिक एजुकेशन बहुत है । वहाँ मैनेजर होता है वह भी पढता हैं, नागरिक पढता है, वोटर पढता है । यहाँ यदि लोग निरक्षर और अशिक्षित हैं तो आप बहुत अच्छा प्रोग्राम देंगे। कौन पढेगा ? उसके बाद देहरादून में उनका एक शिबिर हुआ । एम.एन.राय की विशेषता यह थी कि उनका मास फोरम नहीं था लेकिन वो स्वयं इंटेलेक्चुअल जायंट (महापंडित) थे एवं उनके सारे शिष्य इंटेलक्चुअल जायंट थे । जैसे जस्टिस चंद्रचूड, लक्ष्मण, राजश्री जोशी । उन शिष्यों ने एक प्रश्न किया कि करोडों लोग निरक्षर हैं । पब्लिक एजुकेशन करने में तो बहुत समय लगेगा यह तो बडा लंबा मार्ग है । एम.एन.राय का उत्तर बहुत अच्छा रहा उन्होंने कहा-Yes it may be a long way, but if would be the only way, then it is also the shortest way. ये लम्बा रास्ता हो सकता है लेकिन यदि यह एकमात्र रास्ता हम जानते हैं तो सबसे नजदीक का रास्ता वही हो सकता है ।

आज हम उसका अनुभव कर रहे हैं । सिस्टम नयी है । हम जानते हैं कि आज के कांस्टीट्यूशन में, १९३५ एक्ट ७०% है । बाकी अंग्रेजों का, थोडा सा बाहर के लोगों का अनुकरण करते हुए हमारा कांस्टीट्यूशन है । वहाँ ये पार्लियामेंटरी सिस्टम है, यही सिस्टम हमने यहाँ लायी । लेकिन फिर भी दोनों में अंतर हैं । दोनों देशों का ऐतिहासिक घटना क्रम इतना अलग है जिसके कारण हिंदुस्थान में ये गडबड चल रही है । हिन्दू, मुसलमान हैं, फॉरवर्ड, बैकवर्ड है, बैकवर्ड अपर क्लासेस हैं, सवर्ण विरुद्ध अस्पृश्य ये सारी गडबडी हैं ।

आप ऐसा मत समझिये कि सारे दलित एक हैं । हमारे यहाँ ऐसी जातियाँ है कि एक दलित जातियाँ दूसरे दलित जातियों के हाथों से पानी नहीं पीते । कुछ गाँव ऐसे हैं जहाँ दलित ही हैं, अलग अलग जाति के हैं । वहाँ एक दलित जाति का कुआँ अलग है, दूसरे दलित जाति का कुआँ अलग है । पानी नहीं पी सकते । सब जगह झगडे हैं ।

समाज प्रबोधन

किन्तु पब्लिक एजुकेशन न होते हुए डेमोक्रेसी आने से क्या हुआ? वहाँ कैसे आई, हमारे यहां कैसे आई थोडा देखो । आज वहां डेमोक्रेसी है ऐसा कहते हैं क्योंकि वहाँ एडल्ट फ्रॅंचाइज (वयस्क मताधिकार) है । हमारे देश में भी वयस्क मताधिकार है । एडल्ट फ्रेचाईज माने हरेक वयस्क को वोट का राईट है । इंग्लैंड में भी है । वहाँ कैसे आया ? वहाँ पहले केवल राजशाही थी, मोनार्क । उसके खिलाफ डेमोक्रेसी का झगडा कब शुरु हुआ । आपको आश्चर्य होगा बारहवें शताब्दी के अंतिम दशक में शुरु हुआ । रिचडली ३, रिचडली १ - इनके समय ही ये शुरु हुआ । लेकिन ज्यादातर १२१५ का जो मैग्नाचार्ट है वह सब लोग जानते हैं । १२१५ में पहली स्टेप आयी । पार्लियामेंट शब्द १२९५ में आया । किंग काऊंसिल को पार्लियामेंट १२९५ में कहा गया । लेकिन पार्लियामेंट के जो अधिकार आज हैं, वे नहीं थे । केवल एडवाईजरी बॉडी, जैसे कि किंग काऊंसिल एडवाइजरी बॉडी है वैसे ये भी एडवाईजरी बॉडी (सलाहकार मंडली) थी । तेरहवी शताब्दी के अंत में पार्लियामेंट शब्द का निर्माण हुआ, लेकिन पार्लियामेंट की पावर्स नहीं थी । ये कब आई ? १६८८ में जिसको लोग ग्लोरियस रिवोल्युशन कहते हैं, उसके पश्चात् यह मान्य हुआ । मोनार्क सुप्रीम नहीं पार्लियामेंट सुप्रीम है । राजा श्रेष्ठ नहीं अपितु पार्लियामेंट सर्वश्रेष्ठ है । पालियामेंट के शब्द मोनार्क-राजा को सुनने चाहिए यह विचार १६८८ में पहली बार आया । मानो १२१५ में मैग्नाचार्ट, तेरहवी शताब्दी के प्रारंभ में । १७ वी शताब्दी के अंत में पार्लियामेंट की सुप्रीमैसी आयी । क्योंकि सबको अधिकार नहीं था । १६८८ में कितने लोगों को पार्लियामेंट में मत देने का अधिकार था ? टोटल पॉपुलेशन के चार परसेंट लोगों को मतदान का अधिकार था । फिर उन्होंने कहा कि १८३२ में हमने जो एक्ट बनाया-इट वाज ए लॉंग लीप टुवार्ड्स डेमोक्रेसी ऐसा कहा । किन्तु उस एक्ट के द्वारा कितने लोगों को मतदान का अधिकार मिला ? टोटल पोपुलेशन के १० प्रतिशत लोग केवल मतदान के अधिकारी थे ।

फिर उसके बाद १८६७, १८८२ जिसमें और भी क्षेत्र बढा । १९१८ में ज्यादा से ज्यादा लोगों को मतदान का अधिकार मिला और आपको आश्चर्य होगा कि हमारे यहाँ अभी बात चली है कि महिलाओं को ३३% रिजर्वेशन होना चाहिए । लेकिन इंग्लैंड में क्या हुआ ? वहाँ की महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला १९१८ में और वो भी पूरा अधिकार नहीं मिला । उन्होंने अधिकार तो दिया लेकिन पुरुषों को अधिकार १८ साल के बाद था, महिलाओं को २१ साल के बाद मिला । पार्लियामेंट में प्रश्न आया, आपने दोनों में फर्क क्यों रखा । उन्होंने कहा २१ साल का हो जाने से कुछ महिलाओं को अपवाद किया जाएगा । क्यों ? उन्होंने कहा-यह एक एक्सपेरीमेंट हैं । एक्सपेरिमेंट कहां तक सफल होता है देखेंगे । सफल हुआ तो सब महिलाओं को अधिकार देंगे नहीं तो यही तक सीमित रखेंगे । सभी महिलाओंको और सभी पुरुषों को मतदान का अधिकार १९२८ में मिला । याने यह संघर्ष चला १२१५ से १९२८ तक चला । कितनी शताब्दियां हो गई ? १३वीं शताब्दी से लेकर २०वीं शताब्दी तक। अर्थात् सात शताब्दी तक संघर्ष चला । संघर्ष में लोगों को एज्युकेशन मिलता है। पोलिटीकल एजुकेशन होता है । संघर्ष में लोगों का माइंड मोल्ड होता है । मन की जन्म जडे घनी होती है । मेथेमेटिक्स तैयार होता है । इसके कारण वहाँ डेमोक्रेटिक टेम्परामेंट पहले आया, डेमोक्रेटिक इंस्टीट्यूशंस बाद में आयी । अब ये ७०० साल का संघर्ष है । उसमें मासेस का पौलिटीकल एजूकेशन हुआ उसके कारण मासेस का डेमोक्रटिक टेम्परामेंट पहले तैयार होना सर्वप्रथम पूरे समाज के जनतंत्र की मानसिकता तैयार होना और बाद में जनतंत्र के अधिकार प्राप्त होना ऐसा इंग्लैंड का ऐतिहासिक घटनाक्रम बतलाता है ।

भारत का घटनाक्रम

हमारे देश में क्या हुआ ? सर्वप्रथम पश्चिमी पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी १९२० में आयी । मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड के रिफोर्म्स के फलस्वरुप । उस समय हिंदुस्थान की जनसंख्या २४ करोड थी । २४ करोड में से कितने लोगों को मतदान का अधिकार १९२० में था ? उस समय फ्युडल राज्यपद्धति थी । काउंसिल ऑफ स्टेटस के लिये १७००० मतदाताओं को मतदान का अधिकार था और नेशनल एसेंबली के लिये ९ लाख ९ हजार लोगों को अधिकार था । हालांकि १७००० में से बहुत सारे लोग ९ लाख ९ हजार में शामिल थे । फिर भी दोनों मिलकर कितनी संख्या होगी देखिए ।

दस लाख से कम हो जाती है । तो दस लाख से कम लोगों को मतदान का अधिकार १९२० में था । और वह भी Without any struggle for democracy. स्ट्रगल तो फ्रीडम के लिए चला था, पर डेमोक्रेसी के लिये स्ट्रगल नहीं था । जैसे कांस्टीच्यूशन तैयार हो गई, करोडों लोगों को एकदम मतदान का अधिकार मिला इसके कारण साइकोलॉजी में क्या अंतर नहीं आएगा ? इंग्लैंड में लोगों ने सात शताब्दी तक स्ट्रगल किया जिसके कारण पौलिटिकल एज्युकेशन हुआ, जिसके कारण मॉल्डिंग ऑफ माइंड्स हुआ, डेमोक्रेटिक टेम्प्रामेंट हुआ । इन हिस्टोरिकल प्रोसेस, और एकदम १९५० के बाद एकाएक करोडों लोगो को अधिकार मिल गया । यह ऐसा ही है जैसा कोई आदमी गरीबी से ऊपर आता है, धीरे-धीरे मेहनत करते करते बडा श्रीमान हो जाता है वो एक-एक पैसे की कीमत जानता है । लेकिन जो सीधे शून्य से एक बार पैदा होते हैं या उसी का लडका जो श्रीमंत अवस्था में पैदा होते हैं उसके लिये पैसे की क्या कीमत है ? तो पैसे के बारे में जो दृष्टिकोन सेल्फमेड पिता का होता है, और ऐसे लडके का होता है, इसमें जैसा अन्तर है, वैसा ही इंग्लैंड की और यहाँ की सिस्टम एकदम समान है, ऐसा बोलने से यह अंतर स्पष्ट नहीं होता । वहाँ सात शताब्दी के बाद ये टेम्परामेंट पैदा हुआ यहाँ से टेम्परामेंट नहीं है, और जब तक टेम्परामेंट नहीं है और एज्युकेशन नहीं है, तो फिर ये सारे जो हैं लालू यादव वगैरैह पैदा होंगे ही इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है । तो यह समझना कि हम ऐसी कोई पद्धति बनायेंगे जिसमें से लालू यादव निर्माण होना ही बन्द हो, असंभव है । रास्ता एक ही है-पब्लिक एज्युकेशन। यह रास्ता सबसे लंबा है लेकिन यही एकमात्र रास्ता होने के कारण नजदीक का रास्ता है । इसी का एक रास्ता सर्वपंथ समादर मंच है ।

धन्यवाद !

वन्दे मातरम्

देशभक्तिका यह व्रत हमने आँख मूँद कर नही लिया है । इतिहास की प्रखर ज्योति में हमने इस मार्ग की परख की है । दृढ प्रतिज्ञ होकर दिव्य अग्नि में जलने का निश्चय जान बुझकर किया है आत्म बलिदान का

- स्वातंत्र्यवीर सावरकर

१६ अप्रैल १९९४ को नागपूर में सम्पन्न मंच के प्रथम अधिवेशन में दिया गया स्व. दत्तोपंत ठेंगडी जी का उद्बोधन

हमारे लिये यह सुखद संयोग है कि, इस अधिवेशन के एक सप्ताह पूर्व सर्वोच्च न्यायालय ने इससे संबंधित विषय पर एक महत्त्वपूर्ण निर्णय दिया था । शिक्षा क्षेत्र के पाठ्यक्रम में प्रस्तावित तथाकथित भगवीकरण के विरोध में कुछ लोगों ने सर्वोच्च न्यायालय के पास शिकायत की थी । सर्वोच्च न्यायालय ने यह स्पष्ट रुप से कहा है कि सबको सर्वधर्म मतों की शिक्षा देने के कारण विभिन्न संप्रदायों में सामंजस्य प्रस्थापित होगा । एक दुसरे के धर्म, पंथ के विषय में जानकारी न रहने के कारण अकारण गलत फैमियाँ फैलती हैं । हमारी दृष्टी से यह निर्णय बहुत ही उपयुक्त है ।

इसमे मनोरंजक बात यह है कि, अन्य वामपंथियों के साथ काँग्रेसी भी भगविकरण (Saffronisation) का विरोध कर रहे हैं । मानो इस शब्द के विषय में उनके मन में नफरत है । शायद वे एक महत्त्वपूर्ण घटना को भुल गये है । दिनांक २ अप्रैल १९३१ को काँग्रेस के कराची अधिवेशन में काँग्रेस का ध्वज कैसा रहे यह निश्चित करने के लिये ध्वज समिति का निर्माण किया था । इस समिति के सदस्य थे पंडित जवाहरलाल नेहरु, सरदार वल्लभभाई पटेल, मास्टर तारासिंग, मौलाना अबुल कलाम आझाद, डॉ. हार्डीकर तथा डॉ. पट्टाभिसितारामैय्या - जो समिति के संयोजक थे । समिति ने सर्वानुमत से शिफारिस की थी कि, ध्वज का रंग एक ही रहे और वह रहे केसरीयाँ । इसके पश्चात गांधीजी के निजी इच्छा के कारण यह सिफारिश स्वीकृत नही की गयी किन्तु ध्वज समिति की मुल सिफारिस केसरीयाँ (Saffron) रंग की ही थी । इस पार्श्वभूमीपर आज के काँग्रेसीयों के केसरीयाँ के विषय में नफरत उनके अज्ञान का ही परीचायक है ।

खैर । जो भी हो यदि सभी संबंधित लोगों ने उसको हृदय से स्वीकार किया तो सर्वोच्च न्यायालय का यह निर्णय हमारी दृष्टी से बहूत ही उपयुक्त रहेगा ।

अल्पसंख्यकों के अधिकारों के संरक्षण के विषय में आज चारो ओर जोरदार चर्चा चल रही है । किन्तु यह आश्चर्य की बात है कि इस सम्पुर्ण चर्चा में एक महत्वपूर्ण सत्य आँखों से ओझल हो रहा है । जो अल्पसंख्यकों में भी अति अल्पसंख्यक है वे इस सवाल को उठा नही रहे है । उन्हे इस विषय में चिंता नही हैं अल्पसंख्यकों में जो बहुसंख्य है, वे ही इस प्रश्न पर गहरी चिंता व्यक्त कर रहे है ।

यह सर्वविदीत है कि पारसी समाज तथा यहुदी समाज संख्या में सबसे कम हैं । यह ऐतिहासिक सत्य है कि अपने देश से निर्वासित पारसी भारत में आये । यहाँ के राजाओं ने उनको आश्रय दिया, रहने के लिये जमीन दी । जिवीकोपार्जन के साधन उपलब्ध करा दिये । उनके धर्ममत के अनुसार चलने की उन्हे पूर्ण स्वतंत्रता दी । इतना ही नही तो उनके धर्ममंदीरों के निर्माण के लिये हिंदु राजा तथा प्रजा ने उन्हे सहायता की । वे भी अपने धर्ममत को तथा परंपराओं को कायम रखते हुए भारत की संस्कृती तथा समाज व्यवस्था के साथ एकात्म हो गये, और भारत को अपनी मातृभूमि मानकर उसके उत्कर्ष के लिये प्रयत्नशील रहे । भारत का प्रारंभीक औद्योगिकरण करने में पारसीयों का बडा योगदान रहा । अंग्रेज सरकार की नीतियों के कारण भारत किस तरह दरिद्री हो रहा है इसका सप्रमाण विश्लेषण नामदार गोपाल कृष्ण गोखले और दादाभाई नौरोजी ने सर्वप्रथम किया । इंडियन नॅशनल काँग्रेस के निर्माण में पारसीयों का योगदान रहा । सन १९०६ में कलकत्ता काँग्रेस के अध्यक्षपद से मा. दादाभाई नौरोजी ने 'स्वराज्य, राष्ट्रीय शिक्षण, स्वदेशी तथा बहिष्कार' इस चतुःसुत्री का उद्घोष किया और यह चतुःसुत्री अंत तक स्वातंत्र्य संग्राम की मार्गदर्शक रही । मॅडम कामा का भी योगदान सर्वविदीत हैं । भारतीय समाज तथा संस्कृती के साथ पारसी पूर्णरुपेण एकात्म हो गया। अपने विदर्भ के दौरे में पूजनीय श्रीगुरुजी ने कहा कि, "मै पारसीयों को अग्निपूजक हिंदू ही मानता हुँ " वे कहते थे, पारसीयों का झिंदावेस्ता यह हिंदुओं का एक उपेक्षित धर्मग्रंथ (छंदव्यवस्था) है ।

सबसे कम संख्या का समाज होते हुए भी उन्हे कभी भी यह चिंता नही लगी कि बहुसंख्य समाज के सामने हमारे जायज अधिकारों का हनन तो नही होगा ।

यही बात यहुदी समाज की हैं १८०० वर्ष पूर्व इस समाज को उसके मातृभूमि से खदेडा गया । परिणामस्वरुप दुनियाके विभिन्न देशों में यहुदी जाकर बसे । कुछ हिंदुस्थान में भी आये उनकी संख्या अत्यंत अल्प थी । हमारे देशके राजाओं ने तथा प्रजा ने उनका आतिथ्य पूर्ण स्वागत किया, उनको रहने के लिये जगह दी । उनकी धर्मपरंपरा के अनुसार व्यवहार करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी । यहाँ तक कि उनके धर्ममंदीरों के निर्माण में भी हिंदु राजा प्रजा ने सहयोग किया । वे भी भारत की संस्कृति तथा समाज के साथ घुलमिल गये । १८०० साल के बाद जब ईसराईल का उसके जन्मभूमि में निर्माण हुआ तब इजराईल ने दुनिया के सभी यहुदीयों को आवाहन किया कि वे नवईजराईल के

निर्माण में अधिकतम योगदान करे । ईजराईल के नेताओं ने यह भी घोषित किया था कि दुनियाके हर एक देश ने उनके साथ अन्याय किया था । दुनियामें हिन्दुस्थान यह एक देश है जिसने उनका प्रेमपूर्वक स्वागत किया । नवनिर्माण के ईजराईल के आवाहन के फलस्वरुप विभिन्न देशों से कई धार्मिक यहुदी लोग अपना-अपना घरबार छोडकर ईजराईल की सहाय्यता करने के लिये गये । हिन्दुस्थान में से भी गये । जानेवालों में अधिक संख्या महाराष्ट्रीय तथा केरलीयों की थी । दोनो मिलकर लगभग ४५,००० संख्या होगी । वे गये और ईजराईल के पुर्ननिर्माण कार्य में जुट गये । किन्तु एक क्षण भी वे भारतमाता को भुले नहीं । भारतीय संस्कृती तथा समाज की विशेषताओं का स्मरण करते हुए वे ईजराईल के साथ एकात्म हुए । प्रौढ तथा वृद्ध महाराष्ट्रीय अपने बच्चों को ज्ञानेश्वर, तुकाराम के संतवचन अभी भी सुनाते है । केरल के प्रौढ तथा वृद्ध अपने बच्चों को कुमारन आशन के तथा वल्लुनोड के काव्यों की पंक्तियाँ सुनाते हैं । उनकी धारणा है कि ईजराईल यह उनकी पितृभूमी है और भारत यह मातृभूमि है । जो ईजराईल मे नही गये, यही निवास करते रहे वे पूर्ववत इसी संस्कृति तथा समाज के साथ एकात्मता रखते हैं । पारसीयों के समान उनकी भी संख्या अति अल्प है किन्तु उनके भी मन में कोई भय नही, कोई चिंता नही और इसके कारण उनके मुख में अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा की भाषा नही । निर्भय, निश्चिंत होकर वे संपुर्ण समाज के साथ एकात्म होकर रहते है ।

स्वातंत्र्यपूर्व कालमे वृत्तपत्रोंकी एक उज्वल परंपरा थी । राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर निर्भयतापूर्वक निष्पक्ष वृत्तीसे सत्य समाचार प्रकाशित करते रहने की १९४७ के पश्चात यह परंपरा टूटती गयी और आज श्री.रामनाथ गोयंका, श्री.सदानंद, श्री. फ्रँक मोरेस, श्री. पोतान् जोसेफ, श्री.सच्चितानंद यह टाईप वृत्तपत्र सृष्टी से लगभग अस्तगत हो गया हैं विदेशी सत्तायें तथा संस्थाये इनका प्रभाव यह एक कारण है और दूसरा प्रबल कारण है ऐसे राजनेता तथा राजनैतिक दल जो राज्यसत्ता प्रगति को ही अपना सर्वोच्च ध्येय मानते है - राष्ट्रहित के भी उपर का ध्येय । स्वाभाविकतः वे चाहते है कि देश में हम ही एकमात्र शक्ति केन्द्र बनकर रहे । हमारे अलावा देशमें दुसरा कोई भी शक्तिकेन्द्र नही रहना चाहिये, वह शक्तिकेन्द्र गैरराजनैतिक रहा तो भी उसको बरदास्त न किया जाय क्योंकि वह कभी भी प्रतिस्पर्धी सत्ता केंन्द्र बन सकता है ।

आपात्काल के समय आदरणीय जयप्रकाश नारायणजीने लोकसंघर्ष समिति के

अध्यक्ष के नाते श्री.एस.एम.जोशी तथा सेक्रेटरी के नाते मुझे नियुक्त किया था और मुझे आदेश दिया था कि गैर कम्युनिस्ट, गैर काँग्रेसी नेताओं, दलों से मिलकर सबका एक दल बन सकता हैं क्या? उसका प्रयास करना । इस प्रयास में मै माननीय चरणसिंह से मिला । हम सब भूमिगत थे । गुप्त वेश में रहते थे । नेताओं से भेट भी गुप्तरुप से ही होती थी । मा. चरणसिंह से भेट श्री.भारतसिंह चौहान के निवासस्थान पर हुई । लोगोंको लगता है कि, जनसंघके लोगों की 'दोहरी सदस्यता' का सवाल सन १९७९ में प्रथम उठाया गया । किंतु यह वस्तुस्थिती नही । हमारी चरणसिंहजी से पहली मुलाकात अक्तुबर १९७६ में हुई । उसी समय उन्होने यह प्रश्न उपस्थित किया था। गैर कम्युनिस्ट, गैर काँग्रेसी ऐसे सब दल मिलकर एकही दल बनाये, यह कल्पना उनको पसंत थी । किन्तु उनकी शर्थ थी कि, जनसंघ के लोगों को ऐसे संयुक्त दल में तबतक प्रवेश न दिया जाय, जबतक वे प्रकट रुपसे घोषित नही करते कि उन्होने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ संबंध विच्छेद किया हैं । मैने कहा, "चौधरी साहब, यह प्रश्न उपस्थित नही होना चाहिये क्यों कि संघ यह गैरराजनितिक संगठन है ।" चौधरी साहब ने कहा कि संघ क्या है और क्या नही है यह अधिकार वाणीसे कौन बता सकता है ? आपने कहा वही संघ कि संघ क्या है, संघ का कोई संविधान तो नही है ।" मैने बताया कि ऐसा नही है । संघ का संविधान है और इस संविधानमे संघ का गैरराजनीतिक स्वरुप आप देख सकते है । चौधरी साहब ने आश्चर्य व्यक्त करते हुये कहा कि क्या वास्तव में संघ का संविधान अस्तित्व मे है ? होगा, तो अगली बैठक मे मुझे वह दिखाईये ।" हमारी अगली गुप्त बैठक मा. उत्तमराव पाटील के निवास पर हुई । तब तक मै संविधान की उन धाराओंको लाल पेन से अधोरेखांकित कर गया था, जिसमें संघ का गैरराजनैतिक स्वरुप निःसंदिग्ध शब्दों में लिपिबद्ध किया गया था । चौधरी साहब आये । जैसे ही उन्होने आसन ग्रहण किया वैसे ही मैने संघ का संविधान उनके हाथ मे थमा दिया । उन्होने उसका शीर्षक पढकर कहा, "अरे ! ऐसा दिखता है कि पहली बैठक मे मैने जो बात कही उसको आपने बहुत गंभीरता से लिया ।" मैने कहा कि आपकी बात को नही तो और किसकी बातको गंभीरता से लिया जाय ? वे हंसने लगे । उन्होने संविधान खोला तक नही, वैसे ही मुझे लौटा दिया । और बोलने लगे, " देखो भाई, मै सीधी बात करने मे विश्वास रखता हूँ । मै घुमा फिराकर बात नही करता । सीधी बात है कि, मै प्रधानमंत्री बनना चाहता हूँ । इसके लिये यह आवश्यक है कि मै कुछ संख्या

मे अपने सांसद लेकर संसद मे जाऊ । मेरा Base of Operation पश्चिमी उत्तरप्रदेश के ८ जिलोंमें है और उनमे १५ प्रतिशत मतदाता मुसलमान है । इसलिये मेरे लिये यह अपरिहार्य है कि मैं संघ को गाली दूं । संघ के संविधान मे क्या लिखा है, यह बात मेरे लिये बेमतलब की है ।

"मै इस बात पर confirm हूं कि जनसंघ के लोगो की दोहरी सदस्यता नही होनी चाहिये । किन्तु मै जानता हूं कि आप मेरी बात नही मानेंगे । सन १७६१ मे एक जाट सरदारने एक महाराष्ट्रीयन सेनापति को कुछ सलाह दी थी । आप महाराष्ट्रीयन बहोत अहंकारी लोग हैं । इस महाराष्ट्रीयन सेनापति ने जाट सरदार की बात नही मानी । अहंकार के कारण नतीजा क्या हुआ, पानिपत की पराजय । इतना बोलकर चौधरी साहब ने बैठक समाप्त की । जनता पार्टीके बनने के पूर्व ही हमारी यह बातचीत हुई थी ।

मतलब यह है कि सत्ता प्राप्ती यही जिनका सर्वोच्च ध्येय है वे देश में दुसरे किसी भी राजनैतिक या गैरराजनैतिक शक्ति केन्द्र को बर्दाश्त नही कर सकते । संघ एक शक्ति केन्द्र होने के कारण सभी सत्ताकांक्षी उसके विरोध मे रहना स्वाभाविक है । ऐसे सत्ताकांक्षी लोगों के प्रभाव में चलनेवाले वृत्तपत्र भी संघ विरोधी रहना यह भी स्वाभाविक है । सत्य के साथ कोई संबंध न रखते हुये संघ के विरोध मे जनता के विभिन्न विभागों को भडकाने का काम यह वृत्तपत्र करते रहते है ।

इन वृत्तपत्रोंकी कार्यशैली कैसी है Modus operend बिलकुल सरल, मानो ईसाइयों को संघ के खिलाफ भडकाना है । कही से भी खबर आई कि किसी इसाईपर लोगोने हमला किया है । हमला किसने किया, क्यों किया, इसकी खबर सरकारी गुप्तचरों को भी प्राप्त होने के पहले, बगैर किसी अधिकृत समाचार के, वृत्तपत्र में एकदम मुख पृष्ठपर छाप देना, कि, "संघवालो ने यह हमला किया है ।" बडे टाईप मे मुख पृष्ठपर छापे हुए समाचार का प्रभाव जनमानस में होता ही है । बाद में जांच होती है, पुलिस, अदालत द्वारा जांच कुछ सप्ताह तक चलती है । यह प्रमाणित हो जाता है कि इसमें संघ का कोई हाथ नही था । झूठी टेबल न्युज मुखपृष्ठ पर देनवाले वृत्तपत्र इस खबर को या तो छापते ही नही और छापा भी तो, बीच मे किसी पृष्ठपर छोटे टाईप में, ताकि जादा लोगों का उधर ध्यान न जाय । झूठ अब्रुनुकसानी के लिये प्रकट क्षमायाचना करना तो इनका कुलधर्म ही नही है । संघ के लिये Damage तो हो ही जाता हैं ।

किन्तु जब बार बार ऐसा होता है तो पाठकों मे से विचारवंत लोगों के ध्यान में यह बदमाशी आ जाती है । विचारवंत इसाईयों के विषय में यही हुआ । उनका संदेह होने लगा कि जानबूझकर संघ विरोधी झूठे समाचार प्रकाशित करना यह किसी षडयंत्र का तो हिस्सा नही ? इस कारण संघ वास्तव में क्या है, यह जानने की इच्छा उनके मन में निर्माण हुई । संघ के कुछ कार्यकर्ता भी इसाईयोंसे संबंध रखते थे । उदाहरणार्थ पुलियनतुर के डॉ. चिदंबरम् । इनके घनिष्ठ मित्रों में पालाके इंडियन इन्स्टिट्यूट ऑफ ख्रिश्चन स्टडीज के संचालक श्री.जोसेफ पुनिकुन्नेल थे, जिनकी बडी शिक्षा संस्था है । वे और २०-२२ चर्च प्रमुख पाला के अदालत मे गये थे प्रारंभ से यह प्रथा थी कि किसी भी चर्च का तथा चर्च प्रॉपर्टी का स्वामित्व इस पॅरिश के सभी सदस्यों का मिलकर सामूहिक रहेगा । वे आपस मे बैठकर निर्णय लेते थे किन्तु कुछ वर्ष पूर्व अचानक व्हॅटिकन सिटी कर आदेश आया था कि सभी चर्चेस की संपुर्ण मालमत्ता की मालकी पोप की ही रहेगी और पोप साहब अपने बिशप के द्वारा प्रॉपर्टी की मॅनेजमेंन्ट करेंगे । पॅरिश के सदस्यों का पूर्वापार चलता आया यह अधिकार पोपने छिन लिया । इस कारण संतप्त होकर उन लोगों ने पाला के अदालत मे केस दायर की थी । डॉ. चिदंबरम् आदि स्थानीय संघवालों को वे नाम से तथा काम से पहचानते थे । इतने मे एक घटना हुई जिसके कारण अचानक संघ-ईसाई वार्ता का प्रारंभ हुआ । नागपूर के हितवाद के उपसंपादक श्री. विराग पाचपोर ने विशेष अध्ययन करके चर्चेस के बारे में एक किताब लिखी थी । उस पुस्तक की प्रस्तावना लेखन के लिए तथा विमोचन के लिए पाचपोरने श्री.जोसेफ पुलिकुन्नेल को प्रार्थना की । उसका स्वीकार करते हुये जोसेफ पुलिकुन्नेल नागपूर आये, उनकी अध्यक्षता में विमोचन हुआ । इस समय मुख्य वक्ता पूजनीय सुदर्शनजी थे । यह घटना याने संघ-ईसाई संवाद का प्रारंभ बिंदु ही था उसके पश्चात राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य, कोची निवासी, जॉन जोसेफ ने इस विषय में पहल की । संघ के सभी प्रमुख लोगों से उन्होने व्यक्तिगत संपर्क प्रस्थापित किया । संघ के प्रमुख लोग तथा गणमान्य ईसाई इनकी बारबार बैठके जॉन जोसेफ ने दिल्ली, मद्रास, बंगलोर, एर्नाकुलम, नागपूर आदि स्थानोंपर करवाई । इस संवाद प्रक्रिया का सातवा चरण अभी अभी केरल के पाला मे संपन्न हुआ। यह सबसे बडी बैठक थी । इस एकत्रीकरण में निम्न महानुभावोने हिस्सा लिया । सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायमूर्ति श्री.के.टी थॉमस । उन्होने Key-Note Address प्रस्तुत किया । कोची विद्यापीठ के

भूतपूर्व कुलगुरु डॉ. एस.व्ही. पायली । उन्होने चर्चासत्र की अध्यक्षता की । इस एकत्रीकरण मे हुए सभी भाषण तथा चर्चाए महत्वपूर्ण थी । एकेक बिंदू महत्व का था ।

अल्पसंख्यकों में जिनकी संख्या बहुत बडी है, वे है मुसलमान और वे अपने अधिकारों के संरक्षण के विषय में हमेशा चिंता व्यक्त करते है । आश्चर्य की बात यह है कि जो अत्यंत अल्पसंख्य है वे पारसी और यहुन्दी तो निर्भय है और मुख्य राष्ट्रीय विचारधारा से एकात्म है । मुसलमान सबसे बहुसंख्यांक होते हुए भी चिंता प्रकट करते है और मुख्य राष्ट्रीय धारा से एकात्म बनना पसंत नही करते । इसका कारण क्या है ?

वास्तव में भारत के विभिन्न स्थानोंपर ऐसे संत महापुरुष निर्माण हुए जिनके भक्त दोनो है- हिंदु तथा मुसलमान । सुफी संप्रदाय के श्रेष्ठ संत सर्वसमन्वयकारी रहे । श्री दत्तात्रय संप्रदायकी एक शाखा के प्रमुख श्री. नृसिंहसरस्वती के एक शिष्य बीदर के मुसलमान राजा थे । दत्त संप्रदाय की दुसरी शाखा गोरखपुर में है जिसके प्रणेता श्री. मच्छिंद्रनाथ तथा श्री. गोरखनाथ रहे है । इस संप्रदाय में बहुत मुसलमान शामील थे और वे नाथ संप्रदाय की उपासना भी करते थे । टिपु सुलतान हर सुबह श्रीरंगपट्टण का दर्शन करता था और लडाई के समय यश प्राप्त हो इस दृष्टी से ब्राम्हणों के द्वारा अभिषेक भी करवाता था। कई हिंदु मंदिरों को निझाम की ग्रँट रहती थी, जो आज की सरकारने भी कायम रखी है । बहुत हिंदु राजाओं के दरबार में तथा सेवा में मुसलमान रहते थे, और मुसलमान पातशहाओं के सेनापती हिंदु हुआ करते थे । हमारे प्रगतिशील विचारक शिवाजी की श्रेष्ठता बताने के लिये कहते है कि शिवाजी सेक्युलर थे क्यों कि उन्होनें स्थान स्थान पर मुसलमानों को रखा था । किन्तु वास्तव में देखा जाय तो लगभग सभी हिंदु, बौद्ध, जैन राजा सेक्युलरही थे ।

जिन मुस्लीम राज्यकर्ताओंने तलवार के भरोसे जबरदस्तीसे हिंदुओंको मुसलमान बनाया वे इस्लाम के धर्म के धार्मिक पुरुष नही थे । अपने साम्राज्य की लॉबी मजबूत बनाने के लिये उन्होंने इस्लाम का उपयोग किया । कार्ल मार्क्स ने कहा है कि जेताओं का सांस्कृतिक स्तर जिन लोगों की सांस्कृतीक स्तर से जहॉ नीचे का रहता है, वहाँ राजनैतिक दृष्टी से जेता रहे लोग सांस्कृतिक दृष्टी से जिन लोगों कि संस्कृती स्वीकार कर लेते है ! उसमें यही हुआ ।

इस नियम के अनुसार, कार्ल मार्क्स लिखते है कि

The Arabs, Turks, Tartars, Moghuls who had successively

overcome India, soon became Hinduisad, the barbarian conquerors being, by an eternal law of history, conquered themselves by the superior civilisation of their subjects,

युगल साम्राज्य को स्थिरता प्राप्त होने के बाद उनके सरदार तथा राजवंश के लोग भी यह जानने के लिये इच्छुक हुए कि हिंदुओं का धर्ममत क्या है । इसका अध्ययन करने लगे । रामायण, महाभारत, अथर्ववेद आदि के पारसी में भाषांतर हुए । उसका प्रभाव भी उच्चवर्णीय मुगलोंपर होता गया। दारा शिकोह के विरोध में औरंगजेब ने तलवार निकाली तब तर्क यही दिया कि दारा तो आधा हिंदु हो गया है । वह पातशाह होगा तो इस्लाम समाप्त होगा । दारा कवी भी था । उसकी एक पंक्तिका अंग्रेजी भाषांतर इस प्रकार है ।

Thou art in the Kacbaa, as well as in the Somnath temple. In the convent well as in the tavem".

यह भावना शांकराव्हेत से नजदीक की है। पाकिस्तान की निर्मिती के लिये भारतीय मुसलमानों की मानसिकता तैयार हो, इसलिये अल्लामा इकबाल द्वारा एक कविता "जवाब-ए-सिकवा" लिखी गई । उसमें जानबुझकर अतिशयोक्ती की गई । मुसलमानों को चिढाने के लिए इसकी अत्युक्ती को मान लिया तो भी ये पंक्तियॉ किन परिस्थितीयों मे लिखी गई, यह सोचने की बात है । चिढाने के स्वर में कवी कहता है -

From the british you have learnt you language.
Your culture from the Hindus.
How can muslims pass as a nation who sheme even the jews.
Into the sky of your nation you rose.Like a bright star with a hue.
But the lure of India's idols has made
Eve Brahmins out of you.

इसका मतितार्थ इतनाही है कि, हिंदु और मुसलंमानों में लगातार cultural intercourse, cultural interaction चलती रहती थी, और दोनो समुदायोंपर उसका प्रभाव होता था और अन्ततोगत्वा यहाँ की संस्कृती सर्वसमावेशक होने के कारण मुसलमानों का भारतीयकरण हो रहा था । क्यों कि assmiliation आत्मसातीकरण यह इस संस्कृती की विशेषता रही है ।

Not destruction, but assimilation अपने अपने धर्ममतों को, धार्मिक परंपराओंको अक्षुण्ण रखते हुए मुसलमान धीरे धीरे इस संस्कृती में assimilate हो रहे थे । हिंदुओंने कभी उनको यह नही कहा कि तुम अपना धर्म मत छोड दो, कुराण और हादिस छोड दो, या मस्जिद जाना बंद करो, या प्रेषित महंमदसाहब को मानना छोड दो। उनकी सभी धार्मिक मान्यताओं को अक्षुण्ण रखते हुए वे यहाँ की संस्कृती में आत्मसात हो रहे थे । राजनैतिक कारणोंसे यहाँ जहाँ इस्लाम का उपयोग किया गया वहाँ वहाँ संघर्ष हुआ । किन्तु सर्वसाधारण लोग जीवन में यह संघर्ष नही था । दोनों एक दुसरे के निकट आ रहे थे ।

अंग्रेजों की नीती रही "फूट डालो और शासन चलाव" इस नीती के अंतर्गत हिंदु मुसलमानों में वैमनस्य निर्माण करने का उन्होंने सफल प्रयास किया । किन्तु सन १८५७ केअंत तक हम हिंदु-मुस्लिम एकता का ही दृष्य देखते हैं । बाद में अंग्रेजो ने अपनी फूट डालने की नीती चढाई । एक राजनीतीज्ञ ने कहा है । Politicians in every country have a knack of explotting religious sentiments for the furtherance of their political ends. When priesthood makes common cause with a gang of politicians, the combination becomes too formidable for an average believer.

अंग्रेजोंकी कुटिल निती तथा उनके द्वारा बढाये गये मुसलमान राजनेताओंकि महत्वाकांक्षाओंके फलस्वरुप २ समुदायोंमे दरार न पैदा हो यह चिंता सन १९२० तक लोकमान्य तिलकजी सफलतापुर्वक करते रहे । किंतु जैसे ही तिलक युग का अन्त हुआ और गांधी युग प्रारंभ हुआ । परिस्थितीयाँ बदलने लगी ।

अंग्रेजोंकी फूट डालने वाली निती का सारा मुसलमान समाज शिकार बना, ऐसा नही कहा जा सकता । बुद्धीवादी मुसलमान बडी संख्या में राष्ट्रवादी थे, काँग्रेस में थे । नई पिढी के लोगों को यह जानकार आश्चर्य होगा कि बॅरिस्टर जिना कट्टर राष्ट्रवादी थे । अल्लामा इकबाल, शौकत अली महंमद अली, सब राष्ट्रवादी थे । तिलकजी अंग्रेजो कि चाल विफल करने मे सफल रहे । अंग्रेज कहते थे कि हिंदु मुस्लिम एकता हो जाए तो हम भारत छोडकर चले जाऐंगे । इस चालं का जवाब तिलकजी ने दिया । किंतु मुस्लिम समाज के प्रतिनिधी इस नाते तिलकजी ने ऐसे मुसलमानों को मान्यता दि कि जो राष्ट्रवादी थे । बॅ. जीना ने विभक्त मतदारसंघ का जगह जगह प्रकट विरोध किया था ।

गांधीजीने राष्ट्रवादी काँग्रेसी मुसलमानों के प्रति उलटी निती अपनायी । जो काँग्रेस को गाली देंगे, लात मारेंगे उनके सामने झुकना और जो काँग्रेस के साथ है उनकी उपेक्षा करना यह निती गांधीजीने अपनायी । इसके कारण राष्ट्रीय मुख्य धारा के साथ जो मुसलमान नेता थे, उनको लगने लगा की We are taken for granted. इन लोगों के खिलाफत आंदोलन के समय तथा अन्य अवसरोंपर भी जो चेतावनीयाँ दी थी उनको गांधीजीने आंखोसे ओझल कर दिया, और Fundamentalists के सामने आत्मसमर्पण करते रहे । इस कारण काँग्रेस के अंतर्गत जो राष्ट्रवादी मुसलमान थे उनको लगने लगा कि अब काँग्रेस में रहना व्यर्थ है । हम राष्ट्रीय मुख्यधारा में रहेंगे तब तक गांधीजी हमारी उपेक्षा ही करेंगे । राष्ट्रीय मुख्यधारा से अलग होकर काँग्रेस का विरोध करेंगे तो हमारी कदर कि जाएगी । इस भावना से उन्होने मुस्लिम लीग को बल प्रदान करना प्रारंभ किया ।

वास्तव में यह सारी कसरत नेता ही कर रहे थे । सर्वसामान्य मुसलमान तथा हिंदु समाज इस झंझट से मुक्त रहकर अपने परस्पर व्यवहार पुर्ववत चला रहे थे । किंतु आखिर नेताओंकि मानसिकता का प्रभाव सामान्य जनोंपर ही होता है । वैसा ही हुआ और गांधीजी की गलत निती के कारण मुसलमानों में पृथकतावादी पाकिस्तानी मनोवृत्ती का विकास होने लगा ।

कट्टरतावादी मुस्लिम नेताओं के साथ समझौता वार्ता करना यह गांधीजी की निती गलत है, यह बात, कुछ घटनाओं के कारण पंडित जवाहरलाल नेहरुजी के ध्यान में आयी और १९ मार्च १९३७ को लखनऊ में उन्होने यह प्रकट रुप से कहा । प्रत्यक्ष मुसलमान समाज के साथ संपर्क न करते हुए उन्होंने मुस्लिम लिग के हातों सौपकर हम उनके नेताओं के साथ समझौता वार्ता कर रहे है, यह हमारी गलती हुई । जिसके कारण कट्टरतावादी मुस्लिम नेता हमेशा सौदेबाजी करते रहे । हमारे लिए उचित यह था कि, हम सिधे सामान्य मुसलमानों के पास जाकर उनको अपनी बात समझाए ।

We have too long thought in terms of pacts and compromises between communal leaders and neglected the people behind them. It is for us now to go ahead to welcome the muslim masses and intelligents in our great organisation and rid the country of communalism in every shed or form

(speeches and documents on Indian Constitution Vo. I page 422/23)

काँग्रेस ने १९२० से ही यह नीती अपनाई होती तो तिलकजी के ही मार्गपर काँग्रेस चलती और आगे आनेवाला विभाजन का संकट निर्माण ही नही होता । किन्तु जवाहरलालजी ने जो नारा दिया था Muslim Mass Contac उसको भी काँग्रेसीयों ने क्रियान्वित नही किया। इस विषय में नेताओं की मानसिकता तथा विचारपद्धती गलत रही । जिसके दुष्परिणाम हम आजतक भुगत रहे है । उचित विचारों का परिणाम उचितही होगा वैसे ही गलत विचारोंका परिणाम गलत ही हुआ है ।

सर्वपंथ समादर मंच का कहना कि, हिंदुस्थान के संदर्भ में Unity शब्द का प्रयोग उचित नही है । Unity शब्द के उच्चारण से ही प्रतीत होता है एक से अधिक Unit का अस्तित्व । Unit जहाँ एक ही है वहाँ Unit शब्द का प्रयोग असंबद्ध हो जाता है । जैसे विवाह के लिये एक से अधिक युनिट की आवश्यकता हुआ करती है, खुद का खुद के साथ विवाह नही हो सकता, या कुश्ती के लिये एक से अधिक युनिट की आवश्यकता हुआ करती है, वैसेही खुद, खुद के साथ कुश्ती नहीं खेल सकता । वैसे ही युनिटी शब्द में Presumption एक से अधिक युनिट के अस्तित्वका है । संपूर्ण भारतीय समाज एक ही युनिट है, With perfect freedom of religion language to all. यहाँ युनिटी शब्दका उच्चारण प्रस्तुत है ।

चाहशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति ताहशी ।

सर्वपंथ समादर मंच के इस अधिवेशन के उद्घाटन के समय मे सभी बंधुओं से विनम्र प्रार्थना करता हुँ कि वे मंच की मानसिकता के समान ही खुद अपनी मानसिकता बनाये । इसी में सभी का कल्याण है ।

If one of you wants to be great, he must be the servant of the rest; and if one of you wants to be first, he must be your slave like the Son of Man, who did not come to be served, but to serve and to give his life to redeem many people. - Holly Bible

डा. सैफुद्दीन जिलानी की श्री गुरुजी से भेंट व वार्ताएँ

श्रीगुरुजी का कलकत्ता में निवास बहुत थोडे समय के लिये था, तथा वह भी व्यस्त कार्यक्रमों से युक्त । अतः उनकी भेंट होना आसान नहीं था । परन्तु उनसे मिलना बहुत जरुरी था । जातीयता के प्रश्न पर राजनीतिक नेतागण जनता को गुमराह कर रहे थे । अतः इस मामले पर उनसे चर्चा के लिये, मै अधीर था ।

इसके पूर्व मेरी उनसे कोई प्रत्यक्ष भेंट नही हुई । कोई पत्र-व्यवहार भी नहीं हुआ । हाल ही वे बीमार हुए और उनपर बडी शल्यक्रिया हुई । इसलिये मैने यह अपना कर्तव्य समझा कि उनके स्वास्थ्य की पूछताछ की जावे तथा शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ और दीर्घायु के लिये अल्ला से प्रार्थना की जावे । मेरी उक्त भावना मेरे मित्र आचार्य दादासाहेब आपटे और श्री.आर.पी.खन्ना के जरिये मैने उन तक पहुंचा दी थी ।

यह एक चमत्कार ही है, कि श्रीगुरुजी एक दुर्धर रोग से मुक्त हो गये । परमात्मा ने जिन असंख्य भारतीयों की प्रार्थना सुनी, उनमें से मै भी एक हूं । इसलिये उनका अभिनन्दन करने की भी मेरी इच्छा थी ।

श्रीगुरुजी न केवल इस देश के सबसे अधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति है, अपितु वे देश के भाग्य-विधाता है । वे कलकत्ता आये, तो मुझे उनसे मिलने का अवसर मिल गया । जातिवाद के दैत्य पर पूर्ण विजय मेरी आकांक्षा है । मुस्लिम बन्धुओं के विषय में सद्भावना रखनेवाले हिन्दुओं की संख्या बहुत होने के कारण मुझे अपने प्रयत्नों में कुछ यश अवश्य प्राप्त हुआ । किन्तु वह सन्तोषकारक नहीं माना जा सकता । मेरे मतानुसार इस कार्य में, सिवा श्रीगुरुजीं के अन्य कोई भी सहायक सिद्ध नहीं हो सकता ।

श्रीगुरुजी से भेट, मेरे जीवन की अत्यन्त प्रेरक एवं अविस्मरणीय घटना सिद्ध हुई । हिटलर से लेकर नास्सर तक विश्व की बडी-बडी हस्तियों से मै मिल चुका हूं । किन्तु श्रीगुरुजी जैसा प्रसन्नचित्त, आत्मविश्वासी और प्रभावी व्यक्तिमत्व अभी तक मेरे देखने में नहीं आया । ईमानदारी के साथ मुझे लगता है कि हिन्दु-मुस्लिम-समस्या को सुलझाने के विषय में, एकमात्र श्रीगुरुजी ही है जो यथोचित मार्गदर्शन कर सकते हैं ।

यह बात कहते समय मैंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपनी आंखों से ओझल नहीं किया है । अनेक वर्षो से संघ का कार्य मै बहुत नजदीक से देखता आ रहा हूं । उसके आधार पर मैं असंदिग्धरुप से कह सकता हूं, कि संघ इस देश के लिये बहूत बडा

सहारा है । किन्तु अपने देश की दृष्टी से संघ-कार्य के महत्व का जिन्हें आकलन नही हुआ, ऐसे लोग अज्ञानवश अथवा जानबूझकर संघ-विरोधी प्रचार किया करते है । सच्चाई तो यह है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मुसलमानों का शत्रू नहीं, अपितु मित्र है । किन्तु यह बात मुसलमानों की समझ में नही आती । इसका कारण यह है, कि वे स्वयं की बुद्धि से विचार नहीं करते । मानों, विचार करने की जिम्मेदारी उन्होने अपने अनभिज्ञ और षडयंत्रकारी नेताओं पर सौंप दी है ।

उसी प्रकार मैं यह भी नहीं भूला हूं कि रा.स्व.संघ में मुसलमानों का प्रवेश निषिद्ध है । हिन्दु समाज में स्वाभिमान जागृत करने के लिये संघ का जन्म हुआ है । यह कार्य पूर्ण होते ही संघ के द्वार अहिन्दुओं के लिये तत्काल खुल जावेंगे । किसी भी इमारत का निर्माण-कार्य, उसकी नींव से हुआ करता है । भारत के भव्य प्रासाद की आधारशिला हिन्दु है । यह नींव मजबुत होते ही, प्रासाद अभूतपूर्व वैभव से जगमगाने लगेगा ।

मैने श्रीगुरुजी से पूछा, 'हाल ही के दिनों में किसी प्रमुख मुसलमान ने आपसे जातिवाद की समस्या पर चर्चा की है अथवा नहीं ? उन्होंने अनेक नाम बताये । परन्तु इस सन्दर्भ में मेरे दिमाग में जिन मुस्लिम नेताओं के नाम थे, उनमें से एक भी उनमें नहीं था । इसलिये, मेरे दिमाग में जो नाम थे उनका उल्लेख करते हुए मैने उनसे सीधा प्रश्न पूछा, 'क्या आप इनसे मिलना चाहेंगे ?' उन्होंने तत्काल उत्तर दिया,'मै उनसे जरुर मिलना चाहूंगा । इतना ही नहीं, उनसे मिलकर मुझे प्रसन्नता होगी ।'

उनके उक्त शब्दों में सदिच्छा एवं प्रामाणिकता का स्पष्ट आवाहन था । परन्तु जैसा कि कुरान में कहा गया है, 'विकृति से चेतनाशुन्य हुए कानों' में क्या वह प्रविष्ट होगा ?

मै समग्र भारतीय जनता का एक नम्रसेवक हूं परन्तु सच कहूं तो मेरे दिमाग में सबसे पहले अगर कोई बात आती है तो वह है, भारत के मेरे मुस्लिम भाइयों के बारे में। हिन्दुओं के लिये नेतृत्व की कोई कमी नहीं है । किन्तु मुसलमानों के हालत उन भेडों जैसी है, जिनका कोई गडरिया ही नहीं है । इसलिये मै मुसलमानों से यही कहना चाहता हूं, कि वे अपनी आंखे और दिमाग खुले रखें । इसी बात को ध्यान में रखकर मैने श्रीगुरुजी से भेंटवार्ता का अवसर मांगा था ।

भेंटवार्ता इस प्रकार है -

प्रश्न :देश के समक्ष आज जो संकट मुंह बाए खडे है, उन्हें देखते हुए हिन्दु-मुस्लिम समस्या का कोई निश्चित हल ढूंढना, क्या आपको आवश्यक प्रतीत नहीं होता ?

उत्तर :देश का विचार करते समय मैं हिन्दु और मुसलमान इस रुप में विचार नहीं करता । परन्तु इस प्रश्न की ओर, लोग किस दृष्टि से देखते है ? आजकल सभी लोग राजनीतिक दृष्टिकोण से ही विचार करते दिखाई देते है । हर कोई, राजनीतिक स्थिति का लाभ उठाकर व्यक्तिगत अथवा जातिगत स्वार्थ सिद्ध करने में लिप्त है । इस परिस्थिति पर मात करने का केवल एक ही उपाय है । वह है राजनीति की ओर देशहित और केवल देशहित की ही दृष्टि से देखना । उस स्थिति में, वर्तमान सभी समस्याएँ देखते ही देखते हल हो जायेंगी ।

हाल ही में मै दिल्ली गया था। उस समय अनेक लोग मुझसे मिलने आये थे उनमें भारतीय क्रान्ति दल, संगठन काँग्रेस आदी दलों के लोग भी थे । संघ को हमने प्रत्यक्ष राजनीति से अलग रखा है । परन्तु मेरे कुछ पुराने मित्र जनसंघ में होने के कारण, कुछ मामलों मे मै मध्यस्थता करुं इस हेतुसे वे मुझसे मिलने आये थे । उनसे मैने एक सामान्य-सा प्रश्न पूछा, 'आप लोग हमेशा अपने दल का और आपके दल के हाथ में सत्ता किस तरह आये इसी का विचार किया करते है । परन्तु दलीय निष्ठा, दलीय हितों का विचार करते समय, क्या आप सम्पूर्ण देश के हितों का भी कभी विचार करते है ?' इस सामन्य से प्रश्न का 'हां' में उत्तर देने के लिये कोई सामने नहीं आया । समग्र देश के हितों का विचार सचमुच उनके सामने होता, तो वे वैसा साफ-साफ कह सकते थे । किन्तु उन्होंने नहीं कहा । इसका अर्थ स्पष्ट है कि कोई भी दल, समग्र देश का विचार नहीं करता । मै समग्र देश का विचार करता हूं । इसलिये मै हिन्दुओं के लिये कार्य करता हूं । परन्तु कल यदि हिन्दु भी देश के हितों के विरुद्ध जाने लगे, तो उनमें मेरी कौनसी रुचि रह जावेगी?

रही मुसलमानों की बात । मैं यह समझ सकता हूं, कि अन्य लोगों की तरह उनकी भी न्यायोचित मांगे पूरी की जानी चाहिये । परन्तु जब चाहे तब विभिन्न सहूलियतों और विशेषाधिकारों की मांगे करते रहना कतई न्यायोचित नहीं कहा जा सकता । मैने सुना है कि प्रत्येक प्रदेश में एक छोटे पाकिस्तान की मांग उठाई गई है । जैसा कि प्रकाशित हुआ है, एक मुस्लिम संगठन के अध्यक्ष ने तो लाल किले पर अपना झंडा फहराने की योजना की बात की है । उन महाशय ने, इसका खंडन भी नहीं किया है । ऐसी बातों से समग्र देश का विचार करनेवालों को संतप्त होना स्वाभाविक है ।

उर्दू के आग्रह का ही विचार करें । पचास वर्षों के पूर्व तक विभिन्न प्रान्तों के मुसलमान अपने-अपने प्रान्तों की भाषाएँ बोला करते, उन्ही भाषाओं में शिक्षा ग्रहण किया करते थे । उन्हें कभी ऐसा नहीं लगा, कि उनके धर्म की कोई अलग भाषा है ।

उर्दू, मुसलमानों की धर्म-भाषा नहीं है । मुगलों के समय में एक संकर भाषा के रुप में वह उत्पन्न हुई । इस्लाम के साथ उसका रत्तीभर का भी सम्बन्ध नहीं है । पवित्र कुरान अरबी में लिखा है । अतः मुसलमानों की अगर कोई धर्म-भाषा हो तो वह अरबी ही होगी। ऐसा होते हुए भी, आज उर्दू का इतना आग्रह क्यों ? इसका कारण यह है, कि इस भाषा के सहारे वे मुसलमानों को एक राजनीतिक शक्ति के रुप में संगठित करना चाहते है । यह संभावना ही नहीं तो एक निश्चित तथ्य है, कि इस तरह की राजनीतिक शक्ती देशहितों के विरुद्ध ही जायेगी । कुछ मुसलमान कहते है, कि उनका राष्ट्र-पुरुष रुस्तम है । सच पूछा जाए, तो मुसलमानों का रुस्तम से क्या सम्बन्ध ? रुस्तम तो इस्लाम के उदय पूर्व ही हुआ था । वह कैसे उनका राष्ट्र-पुरुष हो सकता है ? और फिर प्रभू रामचंद्रजी क्यों नहीं हो सकते ? मै पुछता हूँ कि आप यह इतिहास स्वीकार क्यों नहीं करते ?

पाकिस्तान ने पाणिनी की पांच हजारवीं जयंती मनाई । इसका कारण क्या है ? इसका कारण यह है कि जो हिस्सा पाकिस्तान के नाम से पहचाना जाता है, वहीं पाणिनी का जन्म हुआ था । यदि पाकिस्तान के लोग गर्व के साथ यह कह सकते हैं कि पाणिनी उनके पूर्वजों में से एक है, तो फिर भारत के 'हिन्दु मुसलमान भी-मै उन्हें हिन्दु मुसलमान कहता हूं - पाणिनी, व्यास, वाल्मीकी, राम, कृष्ण आदि को अभिमानपूर्वक अपने महान पूर्वज क्यों नही मानते ?

हिन्दुओं में ऐसे अनेक लोग है, जो शाम, कृष्ण आदि को ईश्वर के अवतार नही मानते । फिर भी वे उन्हें महापुरुष मानते हैं, अनुकरणीय मानते हैं । इसलिये मुसलमान भी यदि उन्हे अवतारी पुरुष न मानें, तो कुछ नहीं बिगडनेवाला है । परन्तु क्या उन्हें राष्ट्रपुरुष नहीं माना जाना चाहिये ?

हमारे धर्म और तत्वज्ञान की शिक्षा के अनुसार हिन्दु ओर मुसलमान समान ही है । ऐसी बात नहीं, कि ईश्वरी सत्य का साक्षात्कार केवल हिन्दु ही कर सकता है । अपने-अपने धर्ममत के अनुसार, कोई भी साक्षात्कार कर सकता है । श्रृंगेरी मठ के शंकराचार्य का ही उदाहरण लें - यह उदाहरण वर्तमान शंकराचार्य के गुरु का है । एक अमेरिकी व्यक्ति

उनके पास आया और उनसे प्रार्थना की, कि उसे हिन्दु बना लिया जाए । इस पर शंकराचार्य जी ने उससे पूछा, कि वह हिन्दु क्यों बनना चाहता है । उसने उत्तर दिया, कि ईसाई धर्म से उसे शांति प्राप्त नहीं हुई है । आध्यात्मिक तृष्णा भी अतृप्त ही है ।

इस पर शंकराचार्यजी ने उससे कहा, 'क्या तुमने सचमुच पहले ईसाई धर्म का प्रामाणिकतापूर्वक पालन किया है ? तुम यदि इस निष्कर्ष पर पहूंच चुंके होंगे कि ईसाई धर्म का पालन करने के बाद भी तुम्हें शांति नहीं मिली, तो मेरे पास अवश्य आओ ।'

हमारा दृष्टिकोण इस तरह का है । हमारा धर्म, धर्म परिवर्तन न करानेवाला धर्म है । धर्मान्तरण तो प्रायः राजनीतिक अथवा अन्य हेतु से कराये जाते है । इस तरह का धर्म-परिवर्तन, हमें स्वीकार नहीं है । हम कहते हैं - 'यह सत्य है । तुम्हें जंजता हो तो स्वीकारों, अन्यथा छोड दो ।'

दक्षिण की यात्रा के दौरान मदुराई में कुछ लोग मुझसे मिलने के लिये आये । मुस्लिम-समस्या पर वे मुझसे चर्चा करना चाहते थे मैने उनसे कहा - 'आप लोग मुझसे मिलने आये, मुझे बडा आनन्द हुआ ।' मुसलमानों के विषय में मेरा दृष्टिकोण उन्होने जानना चाहा, तो मै उनसे बोला, 'यह बात हमेशा ध्यान में रखनी होगी कि हम सबके पूर्वज एक ही है, और हम सब उनके वंशज है । आप अपने-अपने धर्मो का प्रामाणिकता से पालन करें । परन्तु राष्ट्र के मामले में हम सबको एक होना चाहिये । राष्ट्रहित के लिये बाधक सिद्ध होनेवाले अधिकारों और सहूलियतों की मांग बन्द होनी चाहिये । हम हिन्दु है इसलिये हमें विशेष सहूलियतों के अधिकारों की कभी बात नहीं करते । ऐसी स्थिति में कुछ लोग यदि कहने लगे कि हमे अलग होना है, हमें अलग प्रदेश चाहिये तो यह कतई सहन नही होगा ।

ऐसी बात नहीं कि, यह प्रश्न केवल हिन्दु और मुसलमानों के बीच ही हो । यह समस्या तो हिन्दुओं के बीच भी है । जैसे, हिन्दु-समाज में जैन लोग है, तथा-कथित अनुसूचित जातियां है । अनुसूचित जातियों में कुछ लोगों ने डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी बनकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया । अब वे कहते हैं- 'हम अलग है' । अपने देश में अल्पसंख्यकों को कुछ विशेष राजनीतिक अधिकार प्राप्त है । इसलिये प्रत्येक गुट स्वयं को अल्पसंख्यक बताने का प्रयास कर रहा है तथा उसके आधार पर कुछ विशेष अधिकार और सहूलियतें मांग रहा है । इससे अपने देश के अनेक टुकडे हो जावेंगे और सर्वनाश होगा। हम उसी दिशा में बढ रहे है । कुछ जैन-मूनि मुझसे मिले । उन्होने कहा, 'हम हिन्दु नही

है । अगली जनगणना में, हम स्वयं को जैन के नाम से दर्ज करायेंगे ।' मैने कहा, 'आप आत्मघाती सपने देख रहे हो ।' अलगाव का अर्थ है देश का विभाजन और विभाजन का परिणाम होगा आत्मघात, सर्वनाश । जब लोग प्रत्येक बात का विचार राजनीतिक स्वार्थ की दृष्टि से ही करने लगते है, तो अनेक भीषण समस्याएँ उत्पन्न होती है । किन्तु इस स्वार्थ को अलग रखते ही अपना देश एकसंघ बन सकता है । फिर हम सम्पूर्ण विश्व की चुनौती का सामना कर सकते है ।

इस प्रकार के उत्तर की मैने कभी अपेक्षा नहीं की थी । श्रीगुरुजी के व्यापक दृष्टिकोण को देख मै विस्मय विमुग्ध हो उठा । मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों में, श्रीगुरुजी ने देश की सभी समस्याओं का समावेश किया । साथ ही किया उसकी दुर्बलताओं का अचूक निर्देश । भारतीय मुसलमानों के बारे में श्री गुरुजी ने ठीक-ठीक निदान किया, और उस पर सुझाया अपना रामबाण उपाय भी ।

प्रश्न - भौतिकवाद और विशेषतः साम्यवाद से अपने देश के लिये खतरा पैदा हो गया है । हिन्दू और मुसलमान दोनों ही ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास रखते है । क्या आपको ऐसा नही लगता कि दोनों मिलकर इस संकट का मुकाबला कर सकते है ?

उत्तर - यही प्रश्न कश्मीर के एक सज्जन ने मुझसे किया था । उनका नाम सम्भवतः जाजिर अली है । अलीगढ में मेरे एक मित्र अधिवक्ता श्री. मिश्रीलाल के निवासस्थान पर वे मुझसे मिले। उन्होंने मुझसे कहा, 'नास्तिकता और साम्यवाद हम सभी पर अतिक्रमण हेतु प्रयत्नशील है । अतः ईश्वर पर विश्वास रखनेवाले हम सभी को चाहिये कि हम सामूहिक रुप में इस खतरे का मुकाबला करें ।'

मैने कहा, 'मै आपसे सहमत हूँ । परन्तु कठिनाई यह है कि हम सबने मानों ईश्वर की प्रतिमा के टुकडे-टुकडे कर डाले है और हरेक ने एक-एक टुकडा उठा लिया है । आप ईश्वर की ओर अलग दृष्टि से देखते है, ईसाई अलग दृष्टि से देखते है । बौद्ध लोग तो कहते है कि ईश्वर तो है ही नही, जो कुछ है वह निर्वाण ही है । जैन लोग कहते है कि सब कुछ शून्याकार ही है । हममें से अनेक लोग राम, कृष्ण, शिव आदि के रुप में ईश्वर की उपासना करते है । इन सब को आप यह किस तरह कह सकेंगे कि एक ही सर्वमान्य ईश्वर को माना जावे । इसके लिये आपके पास क्या कोई उपाय है ?' मुझसे चर्चा करनेवाले सज्जन सूफी थे । मेरी यह धारणा थी कि सूफी पंथी ईश्वरवादी और विचारशील हुआ करते है । मेरे प्रश्न का उन्होने जो उत्तर दिया, उसे सुनकर आप

आश्चर्यचकित हो जाएंगे । क्योंकि उन्होने कहा, 'तो फिर आप सब लोग इस्लाम ही क्यो नही स्वीकार कर लेते ?'

मैने कहा, 'फिर तो कुछ लोग कहेंगे कि ईसाई क्यो नहीं बन जाते ? मेरे धर्म के प्रति मुझमें निष्ठा है इसलिये मैं यदि आपसे कहूं कि आप हिन्दु क्यों नही बन जाते ? याने समस्या जैसी की वैसी रह गयी । वह कभी हल नहीं होगी ।'

इस पर उन्होंने मुझसे पूछा, 'तो फिर इस पर आपकी क्या राय है ?'

मै बोला, 'सभी अपने-अपने धर्म का पालन करे एक ऐसा सर्वभूत तत्वज्ञान है जो केवल हिन्दुओंका या केवल मुसलमानों का ही हो ऐसी बात नही । इस तत्वज्ञान को आप अद्वैत कहें या और कुछ । यह तत्वज्ञान कहता है कि एक एकमेवाद्वितीय शक्ति है । वही सत्य है, वही आनन्द है, वही सृजन, रक्षण और संहार करती है । अपनी ईश्वर की कल्पना उसी सत्य का सीमित है । अन्तिम सत्य का यह मूलभूत रुप किसी धर्म विशेष का नहीं अपितु सर्वमान्य है । तो यही रुप हम सबको एकत्रित कर सकता है । सभी धर्म वस्तुतः ईश्वर की ही ओर उन्मुख करते है । अतः यह सत्य आप क्यों स्वीकार नहीं करते कि मुसलमान, ईसाई और हिन्दुओं का परमात्मा एक ही है, और हम सब उसके भक्त है । एक सूफी के रुप में तो आपको इसे स्वीकार करना चाहिये ।' इसपर उनके पास कोई उत्तर नहीं था । दुर्भाग्य से हमारी बातचीत यही समाप्त हो गयी ।

प्रश्न - हिंदू और मुसलमान के बीच आपसी सद्भाव बहुत है, फिर भी समय-समय पर छोटे-बडे झगडे होते ही रहते है । इन झगडों को मिटाने के लिये आपकी राय में क्या किया जाना चाहिये ?

उत्तर - अपने लेखों में, इन झगडों का एक कारण आप हमेशा बताते है । वह कारण है गाय । दुर्भाग्य से अपने लोग और राजनीतिक नेता भी इस कारण का विचार नहीं करते । परिणामतः देश के बहुसंख्यको में कटुता की भावना उत्पन्न होती हैं मेरी समझ में नही आता कि गोहत्या के विषय में इतना आग्रह क्यों है ? इसके लिये कोई कारण दिखाई नहीं देता । इस्लाम- धर्म गोहत्या का आदेश नहीं देता । पुराने जमाने में हिन्दुओं को अपमानित करने का वह एक तरीका रहा होगा । जब वह क्यों चलना चाहिये ?

इसी प्रकार की अनेक छोटी-बडी बाते है । आपस के पर्वो त्यौहारों में हम क्यों सम्मिलित न हो ? होलिकोत्सव समाज के सभी स्तरों के लोगों को अत्यन्त उल्लासयुक्त वातावरण में एकत्रित करनेवाला त्यौहार है । मान लिजिये कि इस त्यौहार के समय

किसी मुस्लिम बन्धु पर कोई रंग उडा देता है, तो इतने मात्र से क्या कुरान की आज्ञाओं का उल्लंघन होता है ? इन बातों की ओर एक सामाजिक व्यवहार के रुप में देखा जाना चाहिये । मैं आप पर रंग छिडकूं, आप मुझपर छिडकें । हमारे लोग तो कितने ही वर्षो से मोहर्रम के सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित होते आ रहे है । इतना ही नहीं तो अजमेर के उर्स जैसे कितने ही उत्सवों-त्यौहारों में मुसलमानों के साथ हमारे लोग भी उत्साहपूर्वक सम्मिलित होते है । किन्तु हमारी सत्यनारायण की पूजा में हम यदि कुछ मुसलमान बन्धुओं को आमंत्रित करे तो क्या होगा ? आपको विदित होगा कि द्रमुक के लोग उनके मंत्रिमंडल के एक मुस्लिम मंत्री को रामेश्वर के मंदिर में ले गये । मंदिर के अधिकारियों, पुजारियों और अन्य लोगों ने उक्त मंत्री का यथोचित मान-सम्मान किया । किन्तु उसे जब मंदिर का प्रसाद दिया गया, तो उसने वह प्रसाद फेक दिया । उसने ऐसा क्यों किया? प्रसाद ग्रहण करने मात्र से व धर्मभ्रष्ट तो होनेवाला नहीं था । इसी तरह की छोटी-छोटी बातें है । अतः पारस्परिक आदर की भावना उत्पन्न की जानी चाहिये ।

हमें जो वृत्ति अर्थप्रेत है, वह सहिष्णुता मात्र नहीं । अन्य लोग जो कुछ करते है उसे सहन करना सहिष्णुता है । परन्तु अन्य लोग जो कुछ करते हो, उसके प्रति आदर-भाव रखना सहिष्णुता से ऊँची बात है । इसी वृत्ति, इसी भावना को प्राधान्य दिया जाना चाहिये। हमें सबके विषय में आदर है। यही मानवता के लिये हितकार है । हमारा वाद सहिष्णुतावाद नहीं, अपितु सम्मानवाद है । दूसरों के मतों का आदर करना हम सीखें, तो सहिष्णुता स्वयमेव चली आयेगी ।

प्रश्न - हिंदु और मुसलमान के बीच सामंजस्य स्थापित करने के कार्य के लिये आगे आने की योग्यता किसमें है ? राजनीतिक नेता, शिक्षा शास्त्री या धार्मिक नेता में ?

उत्तर - इस मामले में राजनीतिज्ञ का क्रम तो सब से अन्त में लगता है । धार्मिक नेताओं के विषय में भी यही कहना होगा । आज अपने देश में, दोनो ही जातियों के धार्मिक नेता अत्यन्त संकुचित मनोवृत्ति के है । इस काम के लिये नितांत अलग प्रकार के लोगों की आवश्यकता है । जो लोग धार्मिक तो हो किन्तु राजनीतिक नेतागिरी न करते हों और जिनके मन में समग्र राष्ट्र का विचार सदैव जागृत रहा हो, ऐसे लोग ही यह कार्य कर सकते है । धर्म के अधिष्ठान के बिना कुछ भी हासिल नहीं होगा । धार्मिकता होनी ही चाहिये । रामकृष्ण मिशन को ही लें यह आश्रम व्यापक ओर सर्वसमावेशक धर्म-प्रचार का कार्य कर रहा है । अतः आज तो इसी दृष्टिकोण और वृत्ति की आवश्यकता है कि ईश्वरोपासना

विषयक विभिन्न श्रद्धाओं को नष्ट न कर हम उनका आदर करें, उन्हें टिकाए रखें और उन्हें वृद्धिंगत होने दे ।

राजनीतिक नेताओं के जो खेल चलते है, उन्हीसे भेदभाव उत्तरोत्तर बढता जाता है। जातियों, पंथो पर तो वे जोर देते ही है, साथ ही भाषा, हिन्दु- मुस्लिम आदि भेद भी वे पैदा करते हैं । परिणामतः अपनी समस्याएँ अधिकाधिक जटिल होती जा रही है। जातिसम्बन्धी समस्या के मामले में तो राजनीतिक नेता ही वास्तविक खलनायक है । दुर्भाग्य से राजनीतिक नेता ही आज जनता का नेता बन बैठा है, जबकि चाहिये तो यह था कि सच्चे विद्वान, सुशील और ईश्वर के परमभक्त महापुरुष जनता के नेता बनते । परन्तु इस दृष्टि से आज उनका कोई स्थान ही नही है । इसके विपरीत, नेतृत्व आज राजनीतिक नेताओं के हाथों में है । जिनके हाथों में नेतृत्व है, वे राजनीतिक पशु बन गये है । अतः हमें लोगों को जागृत करना चाहिये । दो दिनों पूर्व ही मैने प्रयाग में कहा, कि लोगों को राजनीतिक नेताओं के पीछे नहीं जाना चाहिये । अपितु ऐसे सत्पुरुषों का अनुकरण करें, जो परमात्मा के चरणों में लीन है, जिनमें चारित्र्य है और जिनकी दृष्टि विशाल है ।

प्रश्न - क्या आपको ऐसा नही लगता कि जातीय सामंजस्य-निर्माण का उत्तरदायित्व, बहुसंख्य समाज के रुप में हिन्दुओं पर है ?

उत्तर - हां, मुझे यही लगता हैं । परन्तु, कुछ कठिनाइयों का विचार किया जाना चाहिये । अपने नेतागण सम्पूर्ण दोष हिन्दुओं पर लादकर मुसलमानों को दोष मुक्त कर देते हैं इसके कारण जातीय उपद्रव कराने के लिये, अल्पसंख्यक समाज याने मुस्लिमों को सब प्रकार का प्रोत्साहन मिलता है । इसलिये हमारा कहना है कि इस मामले में दोनों को अपनी जिम्मेदारियों का पालन करना चाहिये ।

प्रश्न - आपकी राय में आपसी सामंजस्य की दिशा में तत्काल कौन से कदम उठाये जाने चाहिये ?

उत्तर - इस तरह से एकदम कुछ कहना कठिन है । बहुत ही कठिन है । फिर भी सोचा जा सकता हैं व्यापक पैमाने पर धर्म की यथार्थ शिक्षा देना एक उपाय हो सकता है । आज जैसी, राजनीतिक नेताओं द्वारा समर्थित धर्महीन शिक्षा नहीं, अपितु सच्चे अर्थ में धर्म-शिक्षा, लोगों को इस्लाम का, हिन्दु धर्म का ज्ञान कराये । सभी धर्म मनुष्य को महान, पवित्र और मंगलमय बनने की शिक्षा देते है । यह लोगों को सिखाया जावें ।

दूसरा उपाय यह हो सकता हे कि जैसा हमारा इतिहास है वैसा ही हम पढाएँ आज जो इतिहास पढाया जाता है, वह विकृत रुप में पढाया जाता है । मुस्लिमों ने इस देश पर आक्रमण किया हो तो वह हम स्पष्ट रुप से बताये । परन्तु साथ ही यह भी बताएँ कि यह आक्रमण भूतकालीन है और विदेशीयों ने किया है । मुसलमान यह कहें कि वे इस देश के मुसलमान है और ये आक्रमण उनकी विरासत नही है । परन्तु, जो सही है उसे पढाने के स्थान पर जो असत्य है, विकृत है वही आज पढाया जाता है । सत्य बहुत दिनों तक दबाकर नहीं रखा जा सकता । अन्नतः वह सामने आता ही है और उससे लोगों में दुर्भावना निर्माण होती है । इसलिये मैं कहता हूं कि इतिहास जैसा है वैसा ही पढाया जावे ।

अफजलखां को शिवाजी ने मारा है, तो वैसा ही बताओ । कहो कि एक विदेशी आक्रामक और एक राष्ट्रीय नेता के तनावपूर्ण सम्बन्धों के कारण यह घटना हुई । यह भी बतायें कि हम सब एक ही राष्ट्र है, इसलिये हमारी परम्परा अफजलखां की नही है । परन्तु यह कहने की हिम्मत कोई नहीं करता । इतिहास के विकृतिकरण को मै अनेक बार धिक्कार चुका हूँ और आज भी उसे धिक्कारता हूँ ।

प्रश्न - भारतीयकरण पर बहुत चर्चा हुई, भ्रम भी बहुत निर्माण हुए, तो क्या आप बता सकेंगे कि ये भ्रम कैसे दूर किये जा सकेंगे ।

उत्तर - भारतीयकरण की घोषणा जनसंघ द्वारा की गयी है । किन्तु इस मामले में सम्भ्रम क्यों होना चाहिये ? भारतीयकरण का अर्थ सबको हिन्दू बनाना तो है नही ?

हम सभी को यह सत्य समझ लेना चाहिये, कि हम इसी भूमि के पुत्र है । अतः इस विषय में अपनी निष्ठा अविचल रहना अनिवार्य है । हम सब एक ही मानव-समूह के अंग है, हम सबके पूर्वज एक ही है, इसलिये हम सबकी आकांक्षाएँ भी एक समान है। इसे समझना ही सही अर्थों में भारतीयकरण है ।

भारतीयकरण का यह अर्थ नही कि कोई अपनी पूजा-पद्धति त्याग दे । यह बात हमने कभी नही कही और कभी कहेंगे भी नही । हमारी तो यह मान्यता है कि उपासना की एक ही पद्धति, सभी मानव जातियों के लिये सुविधाजनक नही ।

श्री जिलानी - गुरुजी ! आपकी बात सही है । बिलकुल सौ फीसदी सही है । अतः इस स्पष्टीकरण के लिये मै आपका बहुत ही कृतज्ञ हूँ ।

श्री गुरुजी - फिर भी,मुझे संदेह है कि ये बातें मै सबके समक्ष स्पष्ट कर सका हूँ या नही।

सर्वपंथ समादर मंच-एक परिचय

आज चहुँओर एक ही सवाल उठता दिखाई दे रहा है कि जातीय एवं पांथिक संकीर्णता लिये राजनैतिक स्वार्थ पूर्ण वातावरण से देश को कैसे बचाया जा सकता है ? कैसे भारत वर्ष पुनः विश्व का मार्गदर्शन करने वाला समर्थ एवं सशक्त राष्ट्र बन सकता है ?

श्रद्धेय स्व. दत्तोपंत जी ठेंगडी वर्तमान युग के एक भविष्य द्रष्टा, कर्मवीर मनीषी थे । उन्होने गहन चिन्तन-मन्थन के उपरान्त अपना जीवन ध्येय उपरोक्त प्रश्नों के समाधान मे लगा दिया । उन्होंने अपने जीवन की समस्त दृष्य-अदृष्य शक्ति लगाकर एक समृद्ध राष्ट्र के आधार स्तम्भ श्रमिक एवं कृषक वर्ग में राष्ट्र भक्ति के संस्कार जगाने एवं देश हित में काम करने की प्रेरणा निर्माण करने हेतु भारतीय मजदूर संघ एवं भारतीय किसान संघ की स्थापना की ।

वहीं स्वावलम्बी भारत के निर्माण हेतु पूज्य महात्मा गांधी, वीर सावरकर एवं लोकमान्य तिलक द्वारा प्रणीत स्वदेशी के मंत्र को साकार करने हेतु स्वदेशी जागरण मंच तथा एकात्म राष्ट्र जीवन निर्माण करने के लिये १४ अप्रैल १९९१ को सर्वपंथ समादर मंच की स्थापना की । १६ अप्रैल १९९४ को नागपुर में प्रसिद्ध मुस्लिम विचारक मौलाना वहिवुद्दीन खान एवं पारसी विद्वान नागपुर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री. जाल.पी.गिमी के सान्निध्य में मंच का प्रथम कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

उद्देश्य था राष्ट्रीयता, संस्कृति तथा परमार्थ की दृष्टि से सभी पंथो में समान आदर का भाव निर्माण करना ।

आशीर्वाद, नागपुर-९४२२८३०८५९

प्रकाशक - भारतीय श्रमशोध मंडल